हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

ईश्वर मूर्तियों में नहीं बसते, आपकी भावना ही आपकी ईश्वर है। आपकी आत्मा ही मंदिर है। - चाणक्य

वर्ष 20 अंक 05

मार्च 16-31, 2017

चैत्र कृष्ण - शुक्ल पक्ष

'साधारण' नामक विक्रम सम्वत्
(इस बार 29 मार्च से)

वि. सं. 2073-74

युगाब्द 5117-18

संरक्षक मण्डल
श्री विष्णुहरि डालमिया

सम्पादक
मानवेन्द्र नाथ पंकज

परामर्शदाता
सर्वश्री
डॉ. नन्दकिशोर त्रिखा,
राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार

व्यवस्था - श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. -09582555152

सज्जा - श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम,
प्रभाग - 6
रामकृष्ण पुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152
011-26178992,
011-26103495
ईमेल-hinduvishwa@gmail.com

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए .....$ 50 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित
एक प्रति .....10 ₹
वार्षिक .....200 ₹
त्रिवर्षीय.....500 ₹
पंचवर्षीय .....800 ₹
दसवर्षीय.....1,500 ₹
पन्द्रह वर्षीय.....2,100 ₹

कुल पेज - 28

क्या यह सच है?

2016 में आतंकी बुरहान वानी की मौत के बाद जब पूरा कश्मीर हिंसा की आग में झुलस रहा था, अलगाववादी नेता सैयद अली शाह गिलानी भारत सरकार के खिलाफ जहर उगल रहा था, उसी वक्त गिलानी के पोते को जम्मू कश्मीर की पीडीपी–बीजेपी सरकार ने नियमों में ढील देकर मोटी पगार की एक नौकरी दी।टाइम्स ऑफ इंडिया के मुताबिक गिलानी के पोते अनीस–उल–इस्लाम को जम्मू–कश्मीर टूरिज्म की सहायक संस्था शेर–ए–कश्मीर इंटरनेशनल कंवेक्शन कॉम्पलेक्स (SKICC) में रिसर्च ऑफिसर की नौकरी दी गई है।

खबर है कि राज्य के पर्यटन विभाग ने, जो कि सीधे सीएम महबूबा मुफ्ती की निगरानी में आता है, इस पद पर नियुक्ति की जिम्मेदारी जम्मू–कश्मीर स्टेट सबऑर्डिनेट सर्विस रिक्रूटमेंट बोर्ड या राज्य लोक सेवा आयोग को नहीं सौंपी। लेकिन रिसर्च ऑफिसर पर नियुक्ति के लिए ये कानूनी प्रावधान है कि ये ही संस्थाएं इस पद पर नियुक्ति करेंगी। इस पद के लिए जम्मू–कश्मीर सरकार ने अनीस को हर महीने 1 लाख रुपये की सैलरी दी है। SKICC के एक अधिकारी ने टीओआई को बताया कि पर्यटन सचिव ने बहुत पहले ही अनीस की नियुक्ति कर ली थी। (जनसत्ता, 4 मार्च)

सम्पादकीय

'चयनित' अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता व असहिष्णुता 04
2050 तक भारत में होंगे सबसे ज्यादा मुस्लिम 05
भारत की बुनियाद सच पर; जबकि पाकिस्तान की हिन्दू नफरत पर.....06
सेक्स स्लेव, नूरजहां और 'उम्मा' 08
सीएनएन ने हिन्दुओं को नरभक्षियों के तौर पर दिखाया; अमेरिकन हिन्दू बिफरे 09
मंदिर जा रहे हैं तो ध्यान दें! 10
आइना दिखाने पर क्यों बिदकता सेक्यूलरिस्ट कॉकस? 10
विश्व संवाद केन्द्र कार्यशाला.....12
श्रीविष्णु मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा.....13
हितचिंतक सम्मेलन 15
अन्नदान कर लोगों को दें जीवनदान : डॉ. प्रवीण तोगड़िया.....16
कैंसर पर सेमिनार 17
महिला सशक्तिकरण का अभियान बन गया एकल अभियान : श्यामजी गुप्त.....19
कार्यवृत्त.....20
वनवासी रक्षा परिवार मिलन.....21
महाकवि दशम् गुरु गोबिन्द सिंह जी 22
औरंगजेब से दो-दो हाथ करने वाली मराठा वीरांगना ताराबाई 22-23
सेल्फी : मौत के आगोश में समाते युवा 24
सूरत में मुस्लिम महिला ने संस्कृत में हासिल किए दो गोल्ड मेडल 25
इनटॉलरेंट गैंग वापस आ गया है, चेहरे वही हैं; नारे बदल गए हैं.....26

तटवासी भरतों ने सर्वप्रथम अग्नि जलाई थी। इसी कारण सरस्वती का एक नाम भारती भी हुई। सरस्वती तट से ही अग्नि का अन्यत्र विस्तार भी हुआ। फलत: सरस्वती के साथ ही दृषद्वती और आपया के तटों पर भी यज्ञों का संपादन होने लगा।

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वती

अशोक प्रवृद्ध

परिभाषा

सरस्वती शब्द की व्युत्पति गत्यर्थक सृ धातु से असुन प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है। शब्द सरस,जिसका अर्थ होता है गतिशील जल। सरस का अर्थ गतिशीलता के कारण जल भी हो सकता है,लेकिन केवल जल ही गतिशील नहीं होता,ज्ञान भी गतिशील होता है। सूर्य–रश्मि भी गतिशील होती है ।

अतः सरस का अर्थ ज्ञान, वाणी (अन्तःप्रेरणा की वाणी), ज्योति, सूर्य–रश्मि, यज्ञ ज्वाला, आदि भी किया गया है । ज्ञान के आधार पर सरस्वती का अर्थ सर्वत्र और सर्वज्ञानमय परमात्मा भी हो जाती है । आदिकाव्य ऋग्वेद में सरस्वती नाम देवता (विभिन्न वैदिक देवता एक ही देव के भिन्न–भिन्न दिव्यगुणों के कारण अनेक नाम अर्थात् सरस्वती मात्र देवता,परमात्मा का सूचक नाम मात्र है,श्य रूप भौतिक नदी विशेष नहीं है) तथा नदी वत दोनों ही रूपों में प्रयुक्त हुआ है ।

सरस्वती शब्द का अर्थ करते हुए यास्क ने निरुक्त में लिखा है–

वाङ नामान्युत्तराणि सप्तपञ्चाशत् वाक्स्मात वचेः ।
तत्र सरस्वतीत्येत्स्य नदीवद् देवतावच्चा निगमा भवन्ति ।
तद्यद् देवतावदुपरिष्टातद् व्याख्यास्यामः ।अथैतन्नदीवत ।।

–निरूक्त 2/7/23

अर्थात्– वाक्त शब्द के सत्तावन रूप कहे गये हैं । वाक् के उन सत्तावन रूपों में एक रूप सरस्वती है । वेदों में सरस्वती शब्द का प्रयोग देवतावत् और नदीवत् आया है । नदीवत् अर्थात नदी की भान्ति (नदी नहीं) बहने वाली । सायन एवं निघण्टुकार ने भी सरस्वती के नदी एवं देवता दोनों रूप स्वीकार किये हैं। यास्काचार्य की उक्ति सरस्वती – सरस इत्युदकनाम सर्तेस्तद्वती (निरूक्त 9/3/24) से यह स्पष्ट नहीं होता कि उनका अभिप्राय नदी विशेष है अथवा सामान्य नदियों से अथवा जलाशयों से परिपूर्ण भूमि से।फिर कतिपय विद्वानों ने इसे सरस्वती नाम की नदी विशेष अर्थ (रूप) में स्वीकार किया है। ऋग्वेद में यास्कानुसार केवल छः मन्त्रों में ही सरस्वती नदी रूप में वर्णित है, शेष वर्णन उसके देवता रूप विषयक हैं। ऋग्वेद में सरस्वती का नाम प्रथम वाक् देवता के रूप में प्रयुक्त हुआ है या नदी के लिये यह आज भी विद्वानों के मध्य विवाद के विषय बना हुआ है। यद्यपि मनुस्मृति 1/21 के अनुसार सरस्वती के देवता रूप की कल्पना ही पहले होनी चाहिये तथापि कतिपय विद्वानों के अनुसार बाद में देवता रूप के आधार पर ही नदी विशेष के लिये सरस्वती नाम प्रचलित हुआ।उनके अनुसार ऋग्वेद की सरस्वती मात्र एक दिव्य अन्तःप्रेरणा की देवी, वाणी की देवी ही नहीं वरन प्राचीन आर्य जगत की सात नदियों में से एक भी है।

वैदिक विचार

विद्वानों का विचार है कि ऋग्वैदिक काल में सिन्धु और सरस्वती दो नदियां थीं। ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर दोनों नदियों का साथ–साथ वर्णन तो उल्लेख है ही विशालता में भी दोनों एक सी कही गईं हैं। फिर भी सिन्धु के अपेक्षतया सरस्वती को ही अधिक महिमामयी एवं महत्वशालिनी माना गया है। ऋग्वेद के अनुसार सरस्वती की अवस्थिति यमुना और शतुद्रि (सतलज) के मध्य (यमुने सरस्वति शतुद्रि) थी। ऋग्वेद में सरस्वती के लिये प्रयुक्त विशेषण सप्तनदीरूपिणी, सप्तभगिनीसेविता, सप्तस्वसा, सप्तधातु आदि हैं। सरस्वती से सम्बद्ध ऋग्वेद में उल्लिखित स्थान अथवा व्यक्ति सभी भारतीय हैं। ऋग्वेद 7/95/2 में सरस्वति का पर्वत से उद्भूत हो समुद्रपर्यन्त प्रवाहित होने का उल्लेख मिलता है। भूमि सर्वेक्षण के कई प्रतिवेदनों अर्थात् रिपोर्टों से प्रमाणित होता है कि लुप्त सरस्वती कभी पंजाब, हरियाणा और उत्तरी राजस्थान से प्रवाहित होने वाली विशाल नदी था। स्पेस एप्लीकेशनसेंटर और फिजिकल लेबोरेट्री द्वारा प्रस्तुत लैंड सैटेलाईट इमेजरी एरियल फोटोग्राफ्स से भी सरस्वती की ऋग्वैदिक स्थिति की पुष्टि होती है।

सभ्यता का केन्द्र

ऋग्वेद में सरस्वती के उल्लेखों वाले मन्त्रों को ष्टिगोचर करने से इस सत्य का सत्यापन होता है कि ऋग्वैदिक सभ्यता का उद्भव एवं विकास सरस्वती के कांठे में ही हुआ था,वह सारस्वत प्रदेश की सभ्यता थी। बाद में यह सभ्यता क्षेत्र विस्तार के क्रम में मुख्यतः पश्चिमाभिमुख होकर एवं कुछ दूर तक पूर्व की ओर बढ़ती है। सभ्यता का केन्द्र सरस्वती तट से सिन्धु एवं उसके सहायिकाओं के तट पर पहुंचता है और इस सिलसिले में इसकी व्यापारिक गतिविधियों का व्यापक विस्तार होता है।

कहा जाता है कि सारस्वत प्रदेश के अग्रजन्माओं की आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का श्रेय सरस्वती नदी को ही था।

शेष पृष्ठ 13 पर...

मानवेन्द्र नाथ पंकज

'चयनित' अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता व असहिष्णुता

मंगलमय हो नववर्ष हमारा

हिन्दू कालगणनानुसार उनतीस मार्च, 2017 से 'साधारण' नामक नवविक्रम सम्वत–2074, युगाब्द–5118 का शुभारंभ हो रहा है। ईसाई कालगणनानुसार 31 दिसम्बर, 2016 को जब पुरातन वर्ष 2016 समाप्त हो रहा था, तब हमें शुभकामना संदेश प्राप्त हुए थे। मैंने आशा प्रकट की थी कि जब हिन्दू कालगणनानुसार नववर्ष प्रारंभ होगा, तो भी हमें शुभकामना संदेश प्राप्त होंगे।

विगत सम्वत अनेक संघर्षों का साक्षी रहा है। यदि हिन्दू समाज की ही बात करें तो कश्मीरी पंडित, रियांग हिंदू, प0 पाकिस्तान से आए शरणार्थी, तिब्बत से निर्वासित बौद्ध जो वृहत्तर हिंदू समाज का अंग है, अपनी भूमि पर वापिस जा नहीं पा रहे हैं। बंगाल, केरल, कर्नाटक, उत्तरप्रदेश सहित अनेक स्थानों पर हिंदू असहिष्णुता का शिकार हो रहे हैं; परन्तु उनकी वेदना नक्कारखाने में तूती की आवाज सी बन गई है।

इस पृथ्वी पर जन्मे प्रत्येक व्यक्ति के पूर्वज कभी न कभी हिन्दू रहे हैं; परन्तु दमन का शिकार होना ही मानो हिंदुओं की नियति बन गई है। अमेरिका में भी हिन्दू नस्लीय हिंसा का शिकार हो रहे हैं। दुर्भाग्य से आजादी–आजादी, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लम्बरदार 'चयनित' असहिष्णुता की मांद में रहना पसंद कर रहे हैं।

ज्यादा पीछे न जाएं तो आजादी के समय सन् 47 में जब श्रीगुरुजी केरल प्रवास पर गए थे, तब कम्युनिस्टों ने उन पर हमला किया था, ऐसा बताया जाता है। उस समय कम्युनिस्ट वहां अपना कार्य प्रारंभ किए थे। तब से अब तक बच्चों, महिलाओं सहित लगभग 300 संघ परिवार के कार्यकर्ता कम्युनिस्टों द्वारा की जा रही हिंसा में मारे जा चुके हैं! अनेक अपंग बना दिए गए, अनेक कार्यकर्ताओं पर झूठे केस बना दिए गए हैं!

ऐसा बताया जाता है कि गांधी हत्या के बाद विशेषतः महाराष्ट्र में ब्राह्मणों के विरुद्ध हिंसा की गई। श्यामा प्रसाद मुखर्जी– पं. दीनदयाल उपाध्याय की हत्या की गई। सन् 1984 में जब इन्दिराजी को गोली मारी गई, एम्स अटल बिहारी वाजपेयी व चौधरी चरण सिंह उन्हें देखने गए, तब उन्हें पत्थर मारे गए। सिखों का कत्लेआम किया गया। गोधरा में 59 कारसेवकों को जिंदा जला दिया गया। ये घटनाएं असहिष्णुता नहीं तो और क्या हैं?

बिसाहड़ा–दादरी में गोभक्षक की गैरइरादतन हत्या पर आसमान सर पर उठाने वाले कॉकस को यह ध्यान नहीं आया कि वहां मस्जिद हिन्दू की जमीन पर बनी है, गोभक्षक को मकान के लिए जमीन भी हिंदू ने ही दी थी। अभिव्यक्ति की आजादी–असिहष्णुता के कोरस का दुष्परिणाम यह हुआ कि सेनाध्यक्ष की चेतावनी बेअसर हो रही है। हाल ही में कश्मीर–शोपिया के बाहरी हिंस्से तराल क्षेत्र में एक मुठभेड़ के समय आतंकियों के समर्थकों ने जवानों पर लाठी से हमला किया, बंदूकें छीन लीं। (देखें भाषा, जनसत्ता, 5 मार्च)

आजादी व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को राष्ट्र के विरुद्ध ढाल बनाने वाले कश्मीर–बस्तर की आजादी की मांग कर रहे हैं, वे बतायें कि हांगकांग, ताइवान, उइगर, बलूचिस्तान, सिंध, तिब्बत की आजादी के लिए आंदोलन कब करेंगे? राज्यसभा में जब पीएम ने पूर्व पीएम पर तंज कसा तब सेक्युलर कॉकस बिलबिला गया। परन्तु इसी पीएम के लिए अभद्र–अपमानजनक भाषा का प्रयोग असहिष्णुता क्यों नहीं है?

कांग्रेस को लगता है कि तत्कालीन पीएम के विरुद्ध भाजपा ने जैसा व्यवहार किया, उसका बदला लेने का यह तरीका ही उपयुक्त है। परन्तु वे यह भूल जाते हैं कि 2009 में भाजपा के पीएम–घोषित उम्मीदवार ने पीएम पर वैचारिक हमले किए तब जनता ने उन्हें मासूम मानते हुए भाजपा को नकार दिया। 'युवराज' द्वारा विधेयक फाड़े जाने, मैडम के

शेष पृष्ठ 12 पर...

2050 तक भारत में होंगे सबसे ज्यादा मुस्लिम, प्रजनन दर की महती भूमिका

वॉशिंगटन, नई दिल्ली, 3 मार्च। 2050 तक भारत दुनिया में सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी वाला देश होगा। यूएस बेस्ड प्यू रिसर्च सेंटर की एक रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया में 2010 से 2050 के बीच मुस्लिमों की आबादी 73 फीसदी बढ़ेगी। वहीं, क्रिश्चियन्स की आबादी इसी दौरान 35 फीसदी तक बढ़ेगी, जो दूसरा सबसे तेजी से बढ़ने वाला रिलिजन है। हिंदू 34 फीसदी तक बढ़ेंगे और वे दुनिया में तीसरी सबसे ज्यादा आबादी वाले लोग हो जाएंगे।

बता दें कि फिलहाल भारत दुनिया में मुस्लिम आबादी के मामले में इंडोनेशिया के बाद दूसरे नंबर पर आता है।

2070 तक सबसे ज्यादा होगी मुस्लिमों की आबादी...

द फ्यूचर ऑफ वर्ल्ड रिलिजन रिपोर्ट में कहा गया, 2050 तक दुनिया की पॉपुलेशन 35 फीसदी के रेट से बढ़ेगी। अगर मौजूदा ग्रोथ रेट 2050 के बाद भी बरकरार रहती है तो 2070 तक दुनिया में सबसे ज्यादा लोग मुस्लिम धर्म को मानने वाले होंगे।

2010 में दुनिया में 1.6 अरब मुस्लिम और 2.17 अरब क्रिश्चियन थे। अगर दोनों धर्म अपनी मौजूदा ग्रोथ रेट के हिसाब से बढ़ते रहे तो 2070 तक इस्लाम को मानने वालों की तादाद क्रिश्चियन्स से ज्यादा होगी।

भारत में 2050 तक मुस्लिमों की आबादी 30 करोड़ तक पहुंच सकती है। इसके बावजूद भारत में हिंदू धर्म को मानने वाले ही मेजॉरिटी में रहेंगे।

नास्तिकों की तादाद में होगी गिरावट

अभी दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी क्रिश्चियन्स की है। उनके बाद मुसलमान और फिर सबसे ज्यादा नास्तिकों की आबादी है। हिंदू धर्म को मानने वाले दुनिया में चौथे नंबर पर हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, यूरोप और नॉर्थ अमेरिका में बढ़ोत्तरी के बावजूद 2050 तक नास्तिकों की तादाद में गिरावट आएगी।

2050 तक नास्तिकों की तादाद दुनिया की पॉपुलेशन की 13.2 फीसदी रह जाएगी, जो अभी 16.4 फीसदी है।

इन सारे फैक्ट में रिलिजन्स के बीच फर्टिलिटी रेट भी एक कारण माना जा रहा है। मुस्लिमों में हाइएस्ट रेट है, जो प्रति महिला 3.1 बच्चे है। जबकि क्रिश्चियन्स में ये रेट 2.7 है।

2050 तक दुनिया में किसकी कितनी होगी आबादी

2050 तक मुसलमान कुल आबादी का करीब 30 फीसदी यानी 2.8 अरब होंगे। ईसाई 31 फीसदी यानी 2.9 अरब रहेंगे।

15 साल से नीचे, सबसे ज्यादा तादाद मुस्लिमों की

रिपोर्ट कहती है, दूसरे धर्मों की तुलना में इस्लाम फॉलो करने वालों में सबसे ज्यादा यंग पॉपुलेशन है। इस्लाम में 34v पॉपुलेशन 15 साल से नीचे वालों की है, जबकि दुनिया में 15 साल से नीचे एवरेज 27 फीसदी पॉपुलेशन है। **दूसरे धर्मों के मुकाबले मुस्लिमों में ज्यादा**

आबादी प्रजनन कर रही है और उनके पास भविष्य में भी इसके लिए ज्यादा वक्त है। क्रिश्चियनिटी को मानने वालों में नास्तिक बनने वालों और दूसरे धर्म को अपनाने वालों की तादाद बढ़ सकती है। **करीब 4 करोड़ लोगों के क्रिश्चियन धर्म से जुड़ने की संभावना है, जबकि 10 करोड़ से ज्यादा लोगों के इससे दूर जाने की आशंका जाहिर की गई है।**

अमेरिका में भी बढ़ेगी मुस्लिम आबादी

रिपोर्ट के मुताबिक, अभी अमेरिका में मुस्लिमों की आबादी टोटल पॉपुलेशन का करीब 1 फीसदी है और 2050 तक इसके 2.1 फीसदी होने की उम्मीद है।

मुस्लिम देशों से दूसरे देशों में जाने वाले इमिग्रेंट्स की वजह से दूसरे देशों और यूरोप में इनकी आबादी बढ़ने की उम्मीद है।

हंगरी, इटली, पोलैंड में मुस्लिमों के लिए नेगेटिव सोच

रिपोर्ट बताती है, हंगरी, इटली, पोलैंड और ग्रीस जैसे देशों में मुस्लिमों को लेकर नेगेटिव सोच ज्यादा है।

फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन और नॉर्दर्न–वेस्टर्न देशों में ऐसी सोच कम देखने को मिल रही है। हंगरी में 72 फीसदी लोग मुस्लिमों के लिए नेगेटिव सोच रखते हैं, जबकि ब्रिटेन में ये तादाद 28 फीसदी है।

(http://www.bhaskar.com)

'मैं संघ से जुड़ा हूं और मुझे इस बात पर गर्व है'

"मैं हूं आरएसएस का, मैं संघ से जुड़ा हूं और मुझे इस बात पर गर्व है। इससे किसी दूसरे को क्या मतलब है। अगर कोई संघ से जुड़ा है तो क्या ये कारण काफी है किसी को बड़े पद संभालने के अयोग्य मानने की। जब हमारे प्रधानमंत्री भी संघ के आदमी है तो क्या भगा दें उन्हें भी। संघ के आदमी राज्यपाल भी

शेष पृष्ठ 21 पर....

पाकिस्तान में पैदा हुए कनाडा के लेखक और मुस्लिम कनेडियन कांग्रेस के संस्थापक तारेक फतह ने इस्लाम, मुसलमान और भारत पाकिस्तान से संबंधित कई मुद्दों पर बीबीसी से बात की है।

अपने बेबाक बयानों के लिए मशहूर तारेक फतेह ने बीबीसी से फेसबुक लाइव के दौरान कहा कि इस्लाम का बुनियादी मकसद अल्लाह को एक मानना है। पैगंबर मोहम्मद के साथ जो लोग सबसे पहले आए उनका मकसद तौहीद था, यानी इंसान को अल्लाह के सिवाय किसी के सामने सर नहीं झुकाना चाहिए।

भारत की बुनियाद सच पर; जबकि पाकिस्तान की हिन्दू नफरत पर

पैगंबर मोहम्मद की मौत के बाद जो फसाद शुरु हुए थे वो आज तक चल रहे हैं। उनकी मौत के बाद 18 घंटे तक उनका शव पड़ा रहा किसी ने उन्हें दफनाया नहीं। मुस्लिम शायद ये नहीं जानते हैं या फिर जानना नहीं चाहते कि हमारी आज की मुसीबतें उसी दिन से शुरु हुईं। ये तय हो गया कि जो कुरैशी हैं वो खलीफा बन सकते हैं और अंसार जो हैं वो सिर्फ कुरैशी की खिदमत कर सकते हैं।

शिया–सुन्नी तो कभी मसला था ही नहीं। अंसार बहुसंख्यक थे उन्होंने अपना नेता चुन लिया. जो मक्का–मदीना में रहने वाले अल्पसंख्यक थे। उन्होंने शोर मचाया था कि जो कुरैश नहीं है वो खलीफा नहीं हो सकता। इस्लाम का ये संदेश कि हर कोई बराबर है वो उसी दिन खत्म हो गया था।

दोगलापन हमारी पहचान बन गई है। इतिहास में लिखी बातें हम जानना नहीं चाहते और कोई सवाल करता है तो घुमा–फिरा कर जवाब देते हैं।

मुझसे भारत के मुसलमानों को नहीं मौलवियों को मुश्किल होती है। गज्वा–ए–हिंद मैंने तो नहीं लिखी, फिर मुझ पर लोगों को क्यों ऐतराज है मुझे नहीं पता।

90 फीसदी मुसलमान 20वीं सदी तक तो अनपढ़ थे। अब उनमें घमंड आ गया है। वो अपने आप को विक्टिम मानते हैं, वोटबैंक की राजनीति करते हैं। वो खुद कह रहे है कि हमें बैकवर्ड माना जाए।

वो जमीन जहां रसूल अल्लाह की औलादों को पनाह मिली उस जमीन को इज्जत देने की बजाय आपने अपने नाम उनसे जोड़ने शुरु कर दिए. वो पूछते हैं आपने किस शहर का नाम इलाहाबाद रखा है? क्या मक्का का नाम कभी रामगढ़ हो सकता है?आप तो घमंड से कहते हैं कि हिंदुस्तान की पवित्र जगह का नाम आपने अल्लाह के नाम पर रख दिया। फिर भी लोग कहते हैं कि कोई बात नहीं, साथ मिल कर चलना है।

कितने मुसलमान होंगे जो कोच्चि में इस्लाम की पहली मस्जिद में गए होंगे?क्योंकि उसे किसी हिंदू राजा ने बनाया था। 629 में तो खुद रसूल अल्लाह जिंदा थे और उस समय इस्लाम भी नहीं आया था।

हर वो मुसलमान जिसने अपने नाम के आगे सैयद, नकवी, नदवी, सिद्दिकी लगा लिया है वो दूसरों को कहते है अपनी औकात समझो। लेकिन नफासत से उर्दू नहीं बोलने वाले पूर्व भारतीय राष्ट्रपति को मुस्लिम नहीं मानते।

वो मुसलमान जिसका रंग काला है और जो गलती से मुसलमान हो गया वो इस्लाम के बारे में कुछ नहीं जानता। मैं सड़क का नाम औरंगजेब रखने के भी खिलाफ था। मैंने कहा था नाम बदलो नहीं तो जहां–जहां औरंगजेब का नाम होगा वहां मैं काला पेंट लगा दूंगा। दाराशिकोह तो लाहौर का था पंजाबी बोलता था, उससे मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं. जिसने दाराशिकोह की गर्दन काटी वो चोर है।

भारत के मुसलमानों को लगता है कि अचकन नहीं पहनने वाला और उर्दू नहीं बोलने वाला मुसलमान नहीं है। उन्होंने बादशाह खान को कह दिया आपके नाम से खान मार्केट बना देते हैं, आप जाइए दूर।

मैं अभी से चर्चा में नहीं हूं बल्कि कई सालों से चर्चा में है। मैं 1963 से चर्चा में हूं। बस आपको आवाज नहीं आई। आप अपना कान ठीक न कराएं ये मेरी समस्या नहीं।

इस सवाल के उत्तर में कि जब से भारतीय जनता पार्टी हुकूमत में है तब ही आप आए हैं, तारेक ने कहा तो क्या

सलमान खुर्शीद और शशि थरूर भाजपा के थे जिन्होंने मुझे बुलाया था। या फिर उन्होंने अपनी पार्टी ही बदल दी है।

आपको ना यमन का पता है, ना बलूचिस्तान का ना ही पाकिस्तान की। पूरा भारत इंट्रोवर्ट बन गया है और ये मेरा दोष नहीं हैं।

तारेक ने माना कि वो अपना निशाना तय करते हैं और फिर हमला करते हैं। उन्होंने कहा, मैं चोर को निशाना पर तो लूंगा।

तारेक खुद को 5000 साल पुरानी तहजीब का हिस्सा मानते हैं। इस सवाल पर कि क्या वो जो गड़बड़ियां मुसलमान और इस्लाम में देखते हैं क्या वो ही दूसरे धर्मों में भी देखते हैं, तारेक ने कहा कि वो विश्व हिंदू परिषद के प्रवीण तोगड़िया की निंदा करते हैं लेकिन इन जैसे लोग तो 9/11 हमले में शामिल नहीं थे, उन्होंने बाली में हमला नहीं किया ना ही मुंबई पर हमला किया। **मैं उनके खिलाफ नहीं हूं।**

आरएसएस के बारे में तारेक कहते हैं कि वो हिंदुत्व को लेकर चलती है और हमारे इंटेलिजेंट लोग बंधे हुए हैं। उन्होंने बीते 1000 साल से देश में दरियाए सिंध के आगे देखा ही नहीं। जिहादी तो हिंदुस्तान को बायोपार्टिकल समझता है।

तारेक कहते हैं कि इस वक्त तो आईएसआईएस (कथित इस्लामिक स्टेट) का मुख्य व्यक्ति हिंदुस्तानी है।

तारेक कहते हैं कि अगर सारे खालिस्तानी, पंजाब से सिख बब्बर खालसा में घुस जाते हैं तो ज्यादा से ज्यादा पंजाब हिंदुस्तान से अलग हो जाएगा और वो पाकिस्तान का सैटेलाइट देश बन जाएगा। ऐसा तो नहीं हो सका। मैं खालिस्तान का समर्थन नहीं करता हूं और मैंने कभी ऐसा किया भी नहीं हैं।

मैं पहले भी इसराइल का समर्थन नहीं करता था, अब भी नहीं करता। मैं सद्दाम हुसैन का कभी समर्थक नहीं था। **क्या आपने कभी गुलाम नबी आजाद से पूछा कि उनके बेटे का नाम सद्दाम हुसैन कैसे पड़ा?**

मुसलमान औरतों का दर्जा भारत से अधिक पाकिस्तान में ज्यादा है। हिंदुस्तान के कुछ इलाकों की औरतों का दर्जा पाकिस्तान की औरतों से ज्यादा है जबकि कुछ इलाकों में कम है। बलूचिस्तान में तो महिलाएं गुरिल्ला फाइटर है। आश्चर्य है कि हिंदुस्तान की महिला करीब में हो रहे नरसंहार पर बात ही नहीं करतीं।

मर्दों में भी तभी दानिशमंदी आएगी जब उनकी मांएं उतनी मजबूत होंगी और वो पिंजरे में बांधी नहीं जाएंगी।

जो लोग बुर्का का इस्तेमाल करते हैं यानी अपना चेहरा छिपाते हैं उनको गिरफ्तार करना चाहिए। चेहरा कभी नहीं छिपाया जाना चाहिए। बुर्का और इस्लाम का आपस में कोई संबंध है ही नहीं।

भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मैं वोट नहीं देता। उनकी स्ट्रेंथ है कि उनको अभी तक कई लोग स्वीकार कर नहीं पाए, वो कहते हैं कि वो चायवाला है। कुछ लोगों को कोफ्त भी होती है कि एक आम आदमी कैसे प्रधानमंत्री बन गया है।

इस सवाल के उत्तर में कि अगर आपका नाम तारा चंद होता तो क्या होता, तारेक ने कहा कि शास्त्री जी और इंदिरा गांधी जैसे लोग भारत को बार–बार मिलें। यहां के लोगों ने दूसरों को मारा होता तो मैं उनके विरोध में जरूर बोलता।

सच है इस सरजमीं की बुनियाद सच पर है (सत्यमेव जयते). पाकिस्तान की बुनियाद हिंदू नफरत पर टिकी है। आपकी मासूमियत है कि जिसने आपको गाली दी (इकबाल) आप इनके तराने पढ़ते हैं।

(बीबीसी हिन्दी, 24 फरवरी)

ब्रिटेन ने जिसे रिहा कर ८ करोड़ रु. मुआवजा दिया, उसी ने किया फिदायीन हमला

लंदन 22 फर., (एजेंसी) । ब्रिटेन ने जिस आतंकी को 2002 से 2004 तक ग्वांटानामो जेल में रहने का मुआवजा देकर छोड़ा था, वही अब मोसुल में आईएस का आत्मघाती हमलावर निकला। इसे दस लाख पाउंड (करीब 8 करोड़ रुपए का मुआवजा दिया गया था।

इराकी शहर मोसुल से जारी ताजा वीडियो में इसे आत्मघाती हमला करते दिखाया गया है। आईएस के वीडियो में दिखा यह हमलावर ब्रिटिश नागरिक था। अबू जकारिया अल ब्रितानी नामक यह आतंकी मैनचेस्टर में जन्मा था और उसका असली नाम रोनाल्ड फिडलर था। बाद में उसने अपना नाम जमाल अल हरीथ कर लिया था। 2002 में ग्वांटानामो जेल लाए जाने से पहले वह अफगानिस्तान की जेल में बंद था। गिरफ्तारी के समय उसने बताया था कि वह पाकिस्तान जा रहा था। तालिबान ने तब उसे ब्रिटिश जासूस माना था।

वीडियो सामने आने के बाद पता लगा कि **फिडलर ने इस्लाम कबूल कर लिया था और वह आईएस का आतंकी बन गया था।** आईएस के लिए उसने कई मिशन भी अंजाम दिए। यूके के आतंकवाद विरोधी दस्ते के आर्थर स्नेल ने कहा कि एजेंसी फिडलर के बारे में सही आकलन नहीं कर सकी।

माना जा रहा है कि वह ब्रिटेन से आईएस में शामिल होने सीरिया और इराक जाने वाले 850 लोगों में था। इनमें से करीब 15 प्रतिशत लोग मारे जा चुके हैं।

जर्मनी : मुस्लिम छात्रों के खुलेआम नमाज पढ़ने पर प्रतिबन्ध

जर्मनी के एक उच्च विद्यालय ने मुस्लिम छात्रों के खुले आम नमाज पढ़ने, वजू करने और जानमाज (छोटी चटाई या कालीन) के उपयोग पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। रिपोर्ट के अनुसार पश्चिमी जर्मनी के वुपरताल स्थित विद्यालय ने फरवरी में अपने स्टाफ को चिट्ठी लिखकर मुसलमान छात्रों द्वारा विद्यालय परिसर में नमाज पढ़ने की सुचना देने के लिए कहा।

विद्यालय के प्रवक्ता ने गुरुवार (दो

शेष पृष्ठ 21 पर....

भारतीय उपमहाद्धीप के अधिकतर मुसलमान स्वयं को 'उम्मा' के रुप में देखते है। 'उम्मा' एक अरबी शब्द है, जिसका उपयोग इस्लामी समुदाय या वृहद–अरबत्व के परिपेक्ष्य में होता है। यदि ऐसा है तो दुनिया के सभी इस्लामी देशों को मजहब के आधार पर एक राष्ट्र ही हो जाना चाहिए था। क्या ऐसा हुआ या आगे ऐसा संभव है?

सेक्स स्लेव, नूरजहां और 'उम्मा'

बलबीर पुंज

गुजरात की एक मुस्लिम महिला से जुड़ा दुर्भाग्यपूर्ण और बेहद निंदनीय मामला प्रकाश में आया है। इससे फिर सभ्य समाज को वापिस जिहादी मानसिकता और इस्लामी कट्टरवाद से रूबरू होने का अवसर मिला। अत्याचार करने वाले और उसका शिकार दोनों मुसलमान थे, इसलिए सदैव की तरह देश के किसी भी बुद्धिजीवी, उदारवादी और स्वघोषित पंथनिरपेक्षकों ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और मीडिया का बड़ा भाग भी इस पर मौन रहा।

अहमदाबाद की रहने वाली नूरजहां, सऊदी अरब के दम्माम में एक ब्यूटी पार्लर में काम करती थी, जहां उसका मालिक उसे 'होम सर्विस' के लिए मजबूर करता था। होम सर्विस का अर्थ देह व्यापार होता है, जिसमें "सेक्स स्लेव" को ग्राहकों के घरों में भेजकर सर्विस दी जाती है। बकौल 38 वर्षीय नूरजहां, वो हैदराबाद की उन दो लड़कियों के साथ दम्माम में थी, जिनमें से एक ने अपनी कलाई काटकर आत्महत्या करने की भी कोशिश की थी।

नूरजहां ने बताया कि यदि वे 'सेक्स स्लेव' बनने के लिए तैयार नहीं होती थी, तो उनके साथ पशुओं से भी बदतर व्यवहार किया जाता और बाल खींचकर सिर को दीवार पर मारा जाता था। सेक्स स्लेव बनने से इनकार करने के कारण नूरजहां को जेल भी जाना पड़ा। गत वर्ष अक्टूबर में नूरजहां अपने शौहर के साथ स्वदेश लौटी है।

क्या यह सत्य नहीं कि इस्लामी कट्टरपंथी या जिहादी 'सेक्स स्लेव' और गैर–मुस्लिम महिलाओं के साथ बलात्कार को उचित ठहराने के लिए इस्लाम का सहारा लेते है?अवसर मिलने पर मुस्लिम महिलाओं को भी अपनी हवस का शिकार बनाने से नहीं चूकते है।

कुछ वर्ष पूर्व, सीरिया में आई.एस. के चंगुल से मुक्त हुई यजीदी महिलाओं ने जो कुछ खुलासा किया, वह न केवल भयावह है, बल्कि आंख खोलने वाला भी है। इन महिलाओं के अनुसार, आतंकी उनके साथ क्रूरता की सारी हदें पार करते हुए सामूहिक बलात्कार करते थे।

मुस्लिम बहुल देश लेबनान में फ्रांसीसी नेत्री मरीन–ले–पेन को इस्लामी कट्टरवाद का सामना करना पड़ा। जब वह बेरूत में सुन्नी मुफ्ती शेख अब्देल लतीफ डेरियन से मिलने पहुंची, तो उनपर इस्लामी हिजाब ओढ़ने का दवाब डाला गया। जिसे करने से सुश्री पेन ने इंकार कर दिया।

भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकतर मुसलमान स्वयं को 'उम्मा' के रुप में देखते है। 'उम्मा' एक अरबी शब्द है, जिसका उपयोग इस्लामी समुदाय या वृहद–अरबत्व के परिपेक्ष्य में होता है। यदि ऐसा है तो दुनिया के सभी इस्लामी देशों को मजहब के आधार पर एक राष्ट्र ही हो जाना चाहिए था। क्या ऐसा हुआ या आगे ऐसा संभव है?क्या कारण है कि इस्लामी राष्ट्र होते हुए भी अरब देश, पाकिस्तान और ईरान के बीच ईंट–कुत्ते का वैरभाव है?

सऊदी अरब ने वीजा उल्लंघन के मामलों में 39 हजार पाकिस्तानियों को उनके देश वापस भेज दिया। अंदेशा है कि इनमें से कई आतंकी संगठन आई. एस. से सहानुभूति रखते है। कुवैत भी पाकिस्तान सहित पांच मुस्लिम राष्ट्र के नागरिकों को वीजा देने पर प्रतिबंध लगा चुकी है।

इतना विरोधाभास है कि जहां सऊदी अरब आतंकवाद के विरुद्ध मुखर रूप से खड़ा तो होता है, किंतु वहीं इस्लाम के प्रचार के नाम पर वह दक्षिण एशिया (भारत सहित) देशों में हर वर्ष

करोड़ों डॉलर भेजता है, जिसका उपयोग मदरसों के माध्यम से जिहाद और अलगाव की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है।

14 अगस्त 1947 से विश्व में इस्लामी राष्ट्र के रुप में स्थापित पाकिस्तान, 'उम्मा' सिद्धांत और कट्टर इस्लामी दर्शन की उपज है, जिसमें उसे वामपंथियों और अंग्रेजी शासकों का भरपूर साथ मिला। रक्तरंजित बंटवारे के प्रतीक पाकिस्तान में प्रारंभ से मजहब और राजनीति के केंद्र में हिंसा व कट्टरता रही है।

यदि मजहब सभी मुस्लिमों को एक सूत्र में बांधता है, तो ऐसा क्यों है कि एक सुन्नी मुस्लिम, शिया मुसलमान के खून का प्यासा बना हुआ है? और सुन्नी भी अपने समुदाय के लोगों को मजहब के नाम पर मौत के घाट उतारते है। हाल ही में पाकिस्तान के सिंध स्थित सूफी संत लाल शहबाज कलंदर की दरगाह

सीएनएन ने हिन्दुओं को नरभक्षियों के तौर पर दिखाया; अमेरिकन हिन्दू बिफरे

वाशिंगटन। अमेरिकी न्यूज चैनल सीएनएन ने अघोरियों पर एक शो दिखाया। इस शो का अमेरिकी हिंदुओं ने विरोध किया। उनका कहना है कि ये शो हिंदू धर्म पर हमला है और निगेटिव इमेज पेश करने वाला है। इंडो–अमेरिकन हिंदू ऑर्गनाइजेशंस का कहना है कि निगेटिव इमेज पेश किए जाने से यूएस में भारतीयों पर होने वाले हमले बढ़ सकते हैं। बता दें कि सीएनएन पर बिलीवर विद रेजा असलान शो का प्रीमियर हुआ। ये एक 6 एपिसोड वाली स्प्रिचुअल एडवेंचर सीरीज है। रविवार को शो में अघोरियों की सच्चाई और उनसे जुड़े मिथकों के बारे में बताया गया था।

सीएनएन के शो के बारे में अमेरिकी हिंदू शलभ कुमार ने कहा, ये हिंदू धर्म पर घिनौना हमला है। शलभ ने ट्वीट किया, 'हिंदू धर्म पर इसलिए हमला किया गया,क्योंकि बड़ी तादाद में अमेरिकी हिंदुओं ने डोनाल्ड ट्रम्प का सपोर्ट किया था।' 'मैं इस शो के लिए रेजा असलान और सीएनएन की निंदा करता हूं। बिलीवर शो को मनगढंत तरीके से प्रसारित किया गया।' बता दें कि शलभ कुमार ट्रम्प के टॉप सपोर्टर्स में गिने जाते हैं। इसे अलावा शलभ रिपब्लिकन हिंदू संघ के फाउंडर भी हैं। शलभ के अलावा दूसरी हिंदू ऑर्गनाइजेशंस ने भी सीएनएन के बिलीवर शो का विरोध शुरु कर दिया है।

शेष पृष्ठ 21 पर....

पर आई.एस के आतंकी हमले में 80 से अधिक लोगों की मौत हो गई थी।

प्रतिकार स्वरूप पाकिस्तानी सुरक्षाबलों ने एक अभियान के तहत कथित रुप से 100 आतंकियों को भी मार गिराया। इससे पूर्व, 16 दिसंबर 2014 को पेशावर के एक स्कूल पर हुए आतंकी हमले में 150 बच्चे व अन्य मारे गए थे। क्या यह सत्य नहीं कि विश्व में जितने मुस्लिम, सहधर्मी मुसलमानों के हाथों हलाक होते है, उतने गैर–मुस्लिमों के हाथों नहीं मारे जाते?

मजहब के आधार पर तय हुई किसी देश की राष्ट्रीयता कितनी खोखली नींव पर टिकी होती है, पाकिस्तान उसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। जिस राष्ट्र के चिंतन का आधार कट्टरवाद, मजहबी और 'काफिर' व 'कुफ्र' के घृणास्पद दर्शन से प्रेरित हो, वह न केवल विश्व के लिए, साथ ही उनके अपने नागरिकों के लिए भी घातक है।

इसलिए 1971 में पाकिस्तान दो हिस्सों में बंट गया। आज खंडित पाकिस्तान फिर से टूटने के कगार पर है। ब्लूच, सिंध और पखतून इस्लाम के नाम पर बनी कुत्सित व्यवस्था में घुटन महसूस कर रहे हैं और स्वतंत्रता के लिए छटपटा रहे है।

सातवीं शताब्दी में मुस्लिम आक्रांता मोहम्मद बिन कासिम के भारत पर आक्रमण के बाद भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े भाग में इस्लामी कट्टरवाद ने पैर पसारना प्रारंभ किया। मध्यकाल में जहां बर्बर मुस्लिम शासकों ने मजहब के नाम पर भारत में बड़े पैमाने पर लूटपाट की और विजितों पर अपना दबदबा बनाने के लिए उन्हें अपमानित किया और उनके आराध्य स्थलों को अपना निशाना बनाया। इसी विषैली मानसिकता ने पहले 1947 में भारत का रक्तरंजित बंटवारा करवाया और फिर 1980–90 के दशक में कश्मीरी पंडितों को घाटी से पलायन के लिए विवश किया।

14 वर्ष पूर्व 2003 में, मुझे बतौर सांसद साफमा प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रुप में पाकिस्तान जाने का अवसर मिला। इस दौरान मैंने एक स्थानीय न्यूज चैनल की बहस में भी हिस्सा लिया। जहां एक दर्शक ने मुझसे सवाल किया कि भारत–पाकिस्तान के बीच समस्या का मूल कारण क्या है?

मेरा उत्तर था– भारतीय उपमहाद्वीप में केवल दो प्रकार के लोग रहते है, जिसमें एक हिंदू है तो दूसरा वो हैं, जिनके पूर्वज हिंदू थे। विश्व के इस भू–भाग में लगभग सभी मुसलमान मतांतरित हिंदुओं की ही संतानें हैं। भले ही उनकी पूजा–पद्धति बदल गई हो, परंतु उनकी संस्कृति और जीवनशैली को प्रेरणा इसी भारतीय उपमहाद्वीप की हिंदू व बौद्ध परंपराओं से मिली है।

परंतु इस सच्चाई को नकारते हुए अधिकतर मुस्लिम स्वयं को अरब संसति से जोड़ने का असफल प्रयास करते आए है। जबकि अरब और मध्यपूर्व के देश, भारतीय उपमहाद्वीप के मुसलमानों को अपने समकक्ष नहीं मानते और न ही अपने देश की नागरिकता आसानी से प्रदान करते है।

कट्टर इस्लामी मानसिकता और उसके द्वारा सिंचित आतंकी विषबेल, भारत में सेकुलरिस्टों के पोषण से कश्मीर से लेकर केरल तक फैल चुकी है। गत वर्ष केरल से लापता युवक–युवतियों का आई.एस में भर्ती होना और कश्मीर में आजादी के नाम पर स्कूलों को आग के हवाले करना व सैनिकों पर पथराव इसी खतरनाक चिंतन को ढ़ता प्रदान करता है।

हाल ही में थलसेनाध्यक्ष बिपिन रावत का कश्मीर में पथराव करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई संबंधी वक्तव्य प्रकाश में आया, जिसकी छद्म–पंथनिरपेक्षकों ने निंदा की। क्या घाटी में पाकिस्तान और आई.एस के समर्थन में गूंजते नारे और इन दोनों के लहराते हुए झंडे सभ्य समाज, लोकतंत्र और पंथनिरपेक्षता जैसे शाश्वत मूल्यों का विरोध नहीं है?**तिरंगे का अपमान इसलिए किया जाता है, क्योंकि वह उस भारत का प्रतीक है, जो अनादिकाल से बहुलतावादी संस्कृति का जनक व पोषक है।**

यदि कश्मीर की किसी मुस्लिम महिला के साथ नूरजहां जैसा घृणित व्यवहार हुआ होता तो सभ्य समाज, झोलाछाप स्वयंसेवी संगठन, तथाकथित सेकुलरिस्ट और वामपंथी इसके विरोध में उठ खड़े होते। किंतु सऊदी अरब में भारत की बेटी नूरजहां के साथ हुए नर्कतुल्य बर्ताव पर वह सभी चुप्पी साधे बैठे है। क्यों? (25 फरवरी)

मंदिर जा रहे हैं तो ध्यान दें !

अनिरुद्ध जोशी 'शतायु'

गतांक से आगे....

आप जेलखाने, दवाखाने या पागलखाने से बच नहीं सकते! गृहकलह, दुर्घटना, हत्या या आत्महत्या के दुष्चक्र में फंसकर आप अपनी ही नहीं अपने परिवार की भी जिंदगी दांव पर लगा देंगे।

मंदिर समय

हिन्दू मंदिर में जाने का समय होता है। सूर्य और तारों से रहित दिन–रात की संधि को तत्वदर्शी मुनियों ने संध्याकाल माना है। संध्या वंदन को संध्योपासना भी कहते हैं। संधिकाल में ही संध्या वंदना की जाती है। वैसे संधि 5 वक्त (समय) की होती है, लेकिन प्रातःकाल और संध्याकाल– उक्त 2 समय की संधि प्रमुख है अर्थात् सूर्य उदय और अस्त के समय।

इस समय मंदिर या एकांत में शौच, आचमन, प्राणायामादि कर गायत्री छंद से निराकार ईश्वर की प्रार्थना की जाती है। दोपहर 12 से अपराह्न 4 बजे तक मंदिर में जाना, पूजा, आरती और प्रार्थना आदि करना निषेध माना गया है अर्थात प्रातःकाल से 11 बजे के पूर्व मंदिर होकर आ जाएं या फिर अपराह्नकाल में 4 बजे के बाद मंदिर जाएं।

मंदिर के वार

शिव के मंदिर में सोमवार, विष्णु के मंदिर में रविवार, हनुमान के मंदिर में मंगलवार, शनि के मंदिर में शनिवार और दुर्गा के मंदिर में बुधवार और काली व लक्ष्मी के मंदिर में शुक्रवार जाने का उल्लेख मिलता है। गुरुवार को गुरुओं का वार माना गया है। इस दिन सभी गुरुओं के समाधि मंदिर में जाने का महत्व है।

रविवार और गुरुवार धर्म का दिन

विष्णु को देवताओं में सबसे ऊंचा स्थान प्राप्त है और वेदानुसार सूर्य इस जगत की आत्मा है। शास्त्रों के अनुसार रविवार को सर्वश्रेष्ठ दिन माना जाता है। रविवार (विष्णु) के बाद देवताओं की ओर से होने के कारण बृहस्पतिवार (देव गुरु बृहस्पति) को प्रार्थना के लिए सबसे अच्छा दिन माना गया है।

गुरुवार क्यों सर्वश्रेष्ठ?

रविवार की दिशा पूर्व है किंतु गुरुवार की दिशा ईशान है। ईशान में ही देवताओं का स्थान माना गया है। यात्रा में इस वार की दिशा पश्चिम, उत्तर और ईशान ही मानी गई है। इस दिन पूर्व, दक्षिण और नैऋत्य दिशा में यात्रा त्याज्य है। गुरुवार की प्रकृति क्षिप्र है। इस दिन सभी तरह के धार्मिक और मंगल कार्य से लाभ मिलता है। अतः हिन्दू शास्त्रों के अनुसार यह दिन सर्वश्रेष्ठ माना गया है। अतः सभी को प्रत्येक गुरुवार को मंदिर जाना चाहिए और पूजा, प्रार्थना या ध्यान करना चाहिए।

संध्योपासना के प्रकार

संध्योपासना के 4 प्रकार हैं– 1. प्रार्थना, 2.ध्यान, 3.कीर्तन और 4. पूजा–आरती। व्यक्ति की जिसमें जैसी श्रद्धा है, वह वैसा ही करता है।

प्रार्थना

प्रार्थना में शक्ति होती है। प्रार्थना करने वाला व्यक्ति मंदिर के ईथर माध्यम से जुड़कर अपनी बात ईश्वर तक पहुंचा सकता है। दूसरा यह कि प्रार्थना करने से मन में विश्वास और सकारात्मक भाव जाग्रत होते हैं, जो जीवन के विकास और सफलता के अत्यंत जरूरी हैं।

कीर्तन–भजन– ईश्वर, भगवान या गुरु के प्रति स्वयं के समर्पण या भक्ति के भाव को व्यक्त करने का एक शांति और संगीतमय तरीका है कीर्तन। इसे ही भजन कहते हैं। भजन करने से शांति मिलती है। भजन करने के भी नियम हैं। गीतों की तर्ज पर निर्मित भजन, भजन नहीं होते। शास्त्रीय संगीत अनुसार किए गए भजन ही भजन होते हैं। सामवेद में शास्त्रीय संगीत का उल्लेख मिलता है।

पूजा–आरती

पूजा–आरती एक रासायनिक क्रिया है। इससे मंदिर के भीतर वातावरण की पीएच वैल्यू (तरल पदार्थ नापने की इकाई) कम हो जाती है जिससे व्यक्ति की पीएच वैल्यू पर असर पड़ता है। यह आयनिक क्रिया है, जो शारीरिक रसायन को बदल देती है। यह क्रिया बीमारियों को ठीक करने में सहायक होती है। दवाइयों से भी यही क्रिया कराई जाती है, जो मंदिर जाने से होती है। प्राचीनकाल में प्राचीन मंदिर सामूहिक स्तुति, ध्यान या प्रार्थना के लिए होते थे। उन मंदिर के स्तंभों या

दीवारों पर ही मूर्तियां आवेष्टित की जाती थी। मंदिरों में पूजा–पाठ नहीं होता था। यदि आप खजुराहो, कोणार्क या दक्षिण के प्राचीन मंदिरों की रचना देखेंगे तो जान जाएंगे कि मंदिर किस तरह के होते हैं। ध्यान या प्रार्थना करने वाली पूरी जमात जब खतम हो गई है तो मंदिरों पर पूजा–पाठ का प्रचलन बढ़ा।

पूजा–पाठ के प्रचलन से मध्यकाल के अंत में मनमाने मंदिर बने। मनमाने मंदिर से मनमानी पूजा–आरती आदि कर्मकांडों का जन्म हुआ जो वेदसम्मत नहीं माने जा सकते। जानकार कहते हैं कि उसी मंदिर का महत्व है जिसमें सामूहिक रूप से दो संधिकाल (प्रातः और संध्या) में ठीक और एक ही वक्त पर ध्यान या प्रार्थना की जाती है। मंदिरों में यदि मूर्तियों की पूजा होती है तो कोई बात नहीं, लेकिन एक हाल भी होना चाहिए जहां पांच सौ से हजार लोग प्रार्थना कर सके, प्रवचन सुन सके। परमेश्वर की प्रार्थना के लिए वेदों में कुछ ऋचाएं दी गई है, प्रार्थना के लिए उन्हें याद किया जाना चाहिए। **समाप्य**

(http://hindi.webdunia.com, 18 Feb)

आइना दिखाने पर क्यों बिदकता सेक्यूलरिस्ट काकस?

विनोद बंसल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उत्तर प्रदेश के फतेहपुर की एक रैली में यह कहा जाना कि अगर किसी गांव को कब्रगाह के निर्माण के लिए कोष मिलता है, तो उस गांव को श्मशान की जमीन के लिए भी कोष मिलना चाहिए। गांव में कब्रिस्तान बनता है तो श्मशान भी बनना चाहिए। यदि आप रमजान में बिजली की आपूर्ति निर्बाध करते हैं, तो आपको दीपावाली में भी बिजली की आपूर्ति निर्बाध करनी चाहिए। यदि आप होली पर बिजली की निर्बाध आपूर्ति करते हैं तो ईद पर भी करनी चाहिए यानि, भेदभाव नहीं होना चाहिए।

भाजपा सांसद साक्षी महाराज द्वारा यह कहा जाना कि "चाहे नाम कब्रिस्तान हो, चाहे नाम श्मशान हो, दाह होना चाहिए। किसी को गाड़ने की आवश्यकता नहीं है।" गाड़ने से देश में जगह की कमी पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि "2–2.5 करोड़ साधु हैं सबकी समाधि लगे, कितनी जमीन जाएगी। 20 करोड़ मुस्लिम हैं सबको कब्र चाहिए हिंदुस्तान में जगह कहां मिलेगी।" अगर सबको दफनाते रहे तो देश में खेती के लिए जगह कहां से आएगी, सत्य ही तो है।

इसके अलावा उनका मुसलमानों और ईसाइयों की नसबंदी सम्बन्धी बयान हो या हिन्दुओं द्वारा चार बच्चे पैदा करने की बात हो, चार बीवी और 40 बच्चों का मामला हो या गौ रक्षार्थ मरने या मारने की बात, राम जन्म भूमि पर मंदिर की मांग हो या कुछ अन्य, आखिर हिन्दुओं के अधिकारों या सामान नागरिक कानून की बात में विवाद कैसा?

उपर्युक्त बयानों पर सारा विपक्ष तथा समस्त सेक्यूलरिस्ट ब्रिगेड बौखला गया तथा एक जुट होकर गत एक सप्ताह से लगातार केंद्र में सत्ता धारी पार्टी के पीछे चून बाँध के पड़ा है। किन्तु दूसरी ओर जम्मू– कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री व केन्द्रीय मंत्री रहे फारुख अब्दुल्ला चाहे देश को तोड़ने बाले बयान दें या उन्ही की विचारधारा के पोषक दिल्ली के पर्यावरण मंत्री इमरान हुसैन हिन्दुओं के अंतिम संस्कार में लकड़ियों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाने की सिफारिश करें या बिहार सरकार घरों में आग के खतरे के कारण हिन्दुओं के सर्वोत्तम धार्मिक कार्य यज्ञ / हवन पर प्रतिबन्ध लगाने की बात करें तो ये सभी सेक्यूलरिस्ट मानो बिल में घुस जाते हैं। इतना ही नहीं, यदि कोई भारत माता के टुकड़े करने या कश्मीर की आजादी के नारे लगाए तो ये सभी एक होकर उन देश द्रोहियों के तलवे चाटने लग जाते हैं।

आइए! अब उपरोक्त बयानों की हकीकत की भी पड़ताल करते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने मुस्लिमों के लिए कब्रिस्तानों के निर्माण पर जहां १३०० करोड़ रूपए खर्च किए वहीं गैर मुस्लिमों के श्मशान हेतु मात्र ६३७ करोड़ रूपए ही आबंटित किए गए. यह सर्व विदित है कि ईद व रमजान पर खास सख्ती के साथ बिजली की शत–प्रतिशत आपूर्ति सुनिश्चित की जाती है वहीं दीपावली पर बिजली व होली पर पानी की भारी किल्लत देखने को मिलती है।

इतना ही नहीं, इन हिन्दू त्यौहारों पर अधिकांश सेक्यूलरिस्टों के दिमाग में विविध प्रकार के पर्यावरण प्रदूषण का खतरा भी मंडराता रहता है जबकि वहीँ बकरीद व क्रिसमस पर इन्हें चहुँओर पर्यावरण की स्वच्छता नजर आने लगती है। जहां तक जनसंख्या असंतुलन की बात करें तो अकेले उत्तर प्रदेश को ही ले लो। समस्त भारत में मुस्लिम कुल जनसंख्या के १६.३: हैं। वहीं, उत्तर प्रदेश की शहरी आबादी में इनका प्रतिशत ३७.२: है। यानि, अखिल भारतीय औसत का दुगना।

प्रदेश में मुस्लिम बहुलता वाले कस्बों की संख्या जहां १९८१ में १०१ थी वही संख्या २०१६ में बढ़ कर लगभग ढ़ाई गुनी यानि २३१ हो गई। १५ कस्बों में इनकी आबादी ९०: से अधिक तथा ८४ कस्बों में ७० से ९० प्रतिशत के बीच पहुँच गई है. मात्र आंकडे भयावह नहीं बल्कि वह सोच विचारणीय है जिसके कारण मुस्लिम बाहुल्य गाँव, कस्बों व शहरों में हिन्दू समाज दमन का शिकार बन धर्मांतरण, लव जिहाद व पलायन को मजबूर है।

दुनिया के अन्य देशों में भी झाँके तो कहने को तो इंसान को दफनाने में सिर्फ दो गज जमीन लगती है। लेकिन हालत ये है कि कई देशों में दफनाने के लिए वेटिंग लिस्ट तैयार होने लगी है। एबीपी न्यूज की एक रिपोर्ट के अनुसार एक रिसर्च में ये भी सामने आया कि हांगकांग में मर चुके लोगों की समाधि बनाने के लिए 5 साल की वेटिंग चल रही है। यहाँ जगह की कमी के कारण 1970 के बाद से नए कब्रिस्तान नहीं बन रहे हैं।

आप दुनिया की सारी दौलत देकर भी स्थाई कब्र की जगह नहीं ले सकते हैं। अगले 24 साल में अमेरिका को लास वेगस के बराबर की जमीन चाहिए होगी। फिलीपींस की राजधानी मनीला में जगह की कमी के कारण कब्रिस्तान के ऊपर ही घर बनाने पड़ रहे हैं। मनीला में कब्र का किराया 5 साल बाद नहीं दिया तो वो जगह किसी और को दे दी जा रही है। जापान में कब्रिस्तान की कमी के कारण इंतजार करना पड़ता है तो लोगों को तब तक शव रखने के लिए एक होटल अपनी सर्विस देता है।

अब भारत में भी मान्यताओं के मुताबिक अंतिम संस्कार के लिए कई नियम बदले जा रहे हैं। मुंबई की तरह देश में और भी कई जगहें ऐसी हैं, जहां कब्रिस्तान की कमी के कारण मान्यताओं में बदलाव खुद धर्मगुरु ला रहे हैं। **जैसे छत्तीसगढ़ में ईसाई धर्मगुरुओं ने दफनाने की जगह दाह संस्कार का भी नया रास्ता खोला है। कई चर्च में रविवार की प्रार्थना के बाद इसकी बाकायदा जानकारी भी दी जा रही है।**

अब बात करते हैं अंतिम संस्कार की पद्धतियाँ और उनसे उपजी समस्याओं की. यजुर्वेद के ३९ वें अध्याय के १३ मन्त्रों में अंतिम संस्कार की विशुद्ध

शेष पृष्ठ 26 पर....

विश्व संवाद केन्द्र कार्यशाला

मथुरा, 4–5 मार्च। 'मीडिया समाज का मन बनाता है। संघ परिवार के विरूद्ध जारी दुष्प्रचार को ठीक करने हेतु तथ्यों के साथ सामने आएं। सम्पर्क के विविध उपक्रमों में मीडिया भी एक है। 'एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति' को आत्मसात करते हुए संस्था प्रसिद्धि, व्यक्ति प्रसिद्धि नहीं तथा हिंदू धर्म प्रतीकों के प्रचार– प्रसार हेतु मीडिया को अपना साधन बनाएं।'

दो दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए संघ– अ0भा0 सह प्रचार प्रमुख जे0 नंदकुमार ने उक्त उद्गार व्यक्ति किए। उक्त कार्यशाला में विहिप के मीडिया से संपर्क रखने वाले कार्यकर्ताओं के लिए आयोजित की गई थी। श्री नंदकुमार ने इलेक्ट्रानिक, सोशल व प्रिण्ट मीडिया के विविध पहलुओं को उजागर करते हुए कार्यकर्ताओं को उपयोगी गुर बताए। उन्होंने संपादक के नाम पत्र, न्यूज ड्राफ्टिंग, टीवी चैनल पर परिचर्चा में भाग लेने इत्यादि विषयक सावधानियां–करणीय कार्य बताए।

केरल में कम्युनिस्ट हिंसा में लगातार मारे जा रहे कार्यकर्ताओं, दमन के शिकार परिवारों की मार्मिक वेदना श्री नंदकुमार ने 'केरल में कम्युनिस्ट हिंसा की पृष्ठभूमि' विषय सत्र में प्रस्तुत की। कार्यकर्ताओं से लम्बे वैचारिक संघर्ष के लिए तैयार रहने का आह्वान करते हुए उन्होंने यह भी बताया कि हिंसा–दमन के शिकार लगभग हजार कार्यकर्ताओं के परिजनों की चिंता भी संघ परिवार को करनी पड रही है। 'कन्नूर पीड़ित सहाय निधि' के माध्यम से सहायता की जा रही है। यह संघर्ष विचारधारा का है; व्यक्ति विशेष का नहीं।

विहिप कार्याध्यक्ष डा. प्रवीण तोगड़िया ने 'हिंदू समाज के सम्मुख चुनौतियों तथा उनका लोकतांत्रिक तरीके से उत्तर' विषयक सत्र में तथ्यों के साथ विवेचन किया। समान जनसंख्या नीति की आवश्यकता प्रतिपादित की। उन्होंने इलेक्ट्रानिक मीडिया सम्बंधित जानकारी भी प्रदान की। विहिप संयुक्त महामंत्री डा0 सुरेन्द्र कुमार जैन ने समान नागरिक संहिता के विविध पहलुओं की जानकारी कार्यकर्ताओं को प्रदान की।

विशेषज्ञ व्याख्याता के रूप में पधारे माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बृजकिशोर कुठियाला ने 'सोशल मीडिया का प्रभावी उपयोग' विषयक सत्र में उपयोगी जानकारी प्रदान की। उन्होंने स्पष्ट किया कि हिन्दुत्व के प्रसार/संपर्क में सोशल मीडिया अतिरिक्त साधन हो सकता है; परन्तु पारम्परिक साधनों की श्रेष्ठता अभी भी बरकरार है। डा. सुरेन्द्र कुमार जैन ने ग्वालियर में विगत वर्ष आयोजित कार्यशाला में बताई गई बातों को दोहराते हुए सांगठनिक कसाव पर बल दिया।

समारोप सत्र में भारतीय जनसंचार संस्थान के महानिदेशक/ वरिष्ठ पत्रकार के.जी. सुरेश ने 'प्रिण्ट मीडिया' विषयक सत्र का प्रारंभ करते हुए कहा कि प्रिण्ट मीडिया जितनी विश्वसनीयता जनता की दृष्टि में मीडिया के अन्य उपक्रमों की नहीं है। उन्होंने प्रिण्ट मीडिया के गूढ़ पहलुओं को उद्घाटित करते हुए मीडिया से सम्पर्क के लिए सतत् अध्ययन पर बल दिया। श्री सुरेश ने अपने पत्रकारिता कौशल का उपयोगी उदाहरण प्रतिभागियों के सम्मुख प्रस्तुत किया।

पृष्ठ 04 का शेषांश....

सम्मुख नतमस्तक व गार्डों द्वारा धकियाए जाते जैसे परिदृश्यों के कारण म. सिं. जनता के सामने एक्सपोज हो गए। फलतः 2014 में उन्हें सहानुभूति नहीं मिली।

सम्प्रदाय विशेष के कुछ लोगों द्वारा पीएम के साथ ही अपने विचार रखने वाले कतिपय लोगों के विरुद्ध, संवैधानिक संस्थाओं के विरुद्ध जैसी शब्दावली प्रयोग की जा रही है, सेक्युलरिस्ट कॉकस उनके पीछे दुम दबाकर खड़ा हो जाता है, जो आने वाले विनाश की ओर संकेत कर रहा है! शोपिया मुठभेड़ व उसके बाद मौलवी के नाम से जाने जाने वाले आतंकी के जनाजे में उमड़ी भीड़ इसकी पुष्टि करती है?

यह वैचारिक संघर्ष रहता तो ठीक है परन्तु तथ्य बताते हैं कि सेक्युलरिस्ट कॉकस अराष्ट्रीय शक्तियों के सहयोग से हिंसा से बाज नहीं आ रहा है। जबकि केन्द्र सरकार किंकर्तव्यविमूढ़ जैसी बनी हुई है। देश विरोधी नारे लगाने वाले गिलानी के पोते को जम्मू–कश्मीर सरकार ने नियमों में छूट देकर एक लाख रू. प्रतिमाह की नौकरी नियमों में छूट देकर प्रदान की। शिवसेना के मुखिया द्वारा पीएम के लिए अपमानजनक भाषा के प्रयोग के बावजूद मुम्बई नगर पालिका के चुनावों के बाद भाजपा द्वारा शिवसेना के सम्मुख समर्पण – ये दो उदाहरण केन्द्र में सत्तारूढ़ दल की मानसिकता को परिलक्षित करते हैं। वैचारिक संघर्ष भाड़े के सैनिकों से नहीं अपितु आत्मबल से परिपूर्ण वैचारिक अधिष्ठान से सुसज्जित सैनिकों से हो सकता है, यह बात 'राष्ट्रवादी' शक्तियों को शायद ध्यान नहीं है! सवाल यह है कि हिन्दू कब तक दमन का शिकार होते रहेंगे?

वासंतिक नवरात्र से ही हिन्दू भारतीय/कालगणना प्रारंभ होती है। नवविक्रम सम्वतसर 2074 की मंगलकामनाएं!

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।
अदब्धासो अपरातीस उद्भिदः।।

(यजुर्वेद 25/14)

अर्थात् हमें सभी ओर से ऐसे शुभ विचार प्राप्त हों, जो हमें निरंतर उन्नत, उत्कृष्टतर जीवन की ओर ले जाने वाले हों और जिन्हें सामान्य लोग नहीं समझते।

(8मार्च)

पृष्ठ 2 का शेषांश....

पशुपालक व कृषिजीवी जहां सरस्वती के तटीय वनों और उपजाऊ भूमि से आधिभौतिक उन्नति कर रहे थे,वहीं ऋषि–मुनिगण इसके तट पर सामगायन कर याजिकीय अनुष्ठानों द्वारा आध्यात्मिक उत्कर्ष कर रहे थे।

ऋग्वेद के सूक्तों से इस सत्य का सत्यापन होता है कि सरस्वती नदी नाहन पहाड़ियों से आगे आदिबदरी के निकट निकलकर पंजाब, हरियाणा, उत्तरी–पश्चिमी राजस्थान में प्रवाहित होती हुई समुद्र में प्रभाष क्षेत्र में मिलती है। इसकी स्थिति यमुना और शतुद्रि के मध्य (ऋग्वेद 10/75/5) किन्तु षद्वती (चितांग) के पश्चिम (ऋग्वेद 7/95/2) कही गई है।इसकी उत्पति दैवी (असुर्या ऋग्वेद 7ध्96ध्1) भी मानी गई है। ब्राह्मण ग्रन्थों,श्रौतसूत्रों एवं पुराणादि ग्रन्थों में सरस्वती का उद्गम स्थान प्लक्ष प्राश्रवण कहा गया है। यमुना नदी के उद्गम स्थल को प्लाक्षावतरण कहा गया है।

ऋग्वेद में सरस्वती सम्बन्धी (करीब) पैंतीस मन्त्र अंकित हैं,जिनमें से तीन ऋग्वेद 6/61,ऋग्वेद 7/95 और 7/96 स्तुतियां हैं। विविध मन्त्रों में सरस्वती की अपरिमित जलराशि,अनवरत बदलती रहने वाली प्रचण्ड वेगवती धारा,भयंकर गर्जना,उससे होने वाले संभावित खतरों,महनीयता आदि के भी जीवन्त वर्णन हैं। (ऋग्वेद 6/61/3, 6/61/8, 6/61/11,6/61/13)सरस्वती प्रचण्ड वेगवाली होने के साथ ही सर्वाधिक जलराशि वाली होने के कारण बाढ़ के समय इसका पाट इतना चौड़ा और विस्तृत हो जाता है कि यह आक्षितिज फैली हुई प्रतीत होती है। ऋग्वेद 6/61/7 में अंकित है कि सरस्वती कूल किनारों को तोड़ती हुई बहुधा अपना प्रवाह बदल लेती है।

प्रसविणी सरस्वती

ऋग्वेद 10/64/9 में सरस्वती,सरयू सिन्धु की गणना बडे नदों में हुई है जिसमें ऋग्वेद 7/36/3 में सरस्वती ही सरिताओं की प्रसविणी कही गई है। ऋग्वेद 6/61/12 में अंकित है कि सरस्वती में सात नदियों के मिलने के कारण सप्तधातु एवं ऋग्वेद 6/61/10 में सप्तस्वसा कही गई है। ऋग्वेद 7/96/3 के अनुसार सरस्वती सदा कल्याण ही करती है। सरस्वती का जल सदा और सबको पवित्र करने वाला है।यह पूषा की तरह पोषक अन्न देने वाली है। अन्यान्य नदियों की तुलना में यह सबसे अधिक धन–धान्य प्रदायिनी है।

ऋग्वेद 7/96/3 में यह अन्नदात्री, अन्नमयी एवं वाजिनीवती कही गई है। धन, समृद्धि, ज्ञान प्रदायिनी होने के कारण ही सरस्वती को वाजिनीवती कहा गया है। सरस्वती के माध्यम से नहुष ने अकूत धन–सम्पदा अर्जित की थी। इसी कारण धन–धन्य प्राप्ति के लिये सरस्वती की प्रार्थना करने की परिपाटी बाद में चल पड़ी। सरस्वती का जल स्वच्छ एवं सुस्वादु होने के कारण अन्नोत्पादिका होने के परिणामस्वरूप यह कल्याणकारिणी एवं धन–धान्य प्रदायिनी कही गई है। सरस्वती अग्रजन्माओं की भूमि प्रदायिनी कही गई है।

यज्ञाग्नि की प्रकटस्थली

ऋग्वेद 6/61/3 एवं 8/21/18 के अनुसार सारस्वत प्रदेश की प्राचीनता सिद्ध होती है।सरस्वती के तट पर एक प्रसिद्द राजा और पञ्चजन निवास करते हैं जिन तटवासियों को सरस्वती स्मृद्धि प्रदान करती है। ऋग्वेद 6/61/7 के अनुसार वृत्र का संहार सरस्वती तट पर हुआ था जिसके कारण इसकी नाम वृत्रघ्नी भी हुई। सर्वप्रथम यज्ञाग्नि सरस्वती तट पर प्रज्वलित हुई थी। तटवासी भरतों ने सर्वप्रथम अग्नि जलाई थी। इसी कारण सरस्वती का एक नाम भारती भी हुई। सरस्वती तट से ही अग्नि का अन्यत्र विस्तार भी हुआ। फलतः सरस्वती के साथ ही दृषद्वती और आपया के तटों पर भी यज्ञों का संपादन होने लगा। नदियों में सरस्वती की इतनी महिमा मानी गई है कि इसे नदीतमे ही नहीं अम्बितमे और देवितमे भी घोषित करते हुए कहा गया है–

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वती ।
प्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिम्ब नसधि।। **–ऋग्वेद 2/41/6**

ऋग्वेद 7/96/1 में सरस्वती की महत्ता गायन करने वशिष्ठ को आदेश देते हुए ऋषि कहते हैं, हे वशिष्ठ! तुम नदियों से बलवती सरस्वती के लिये वृहद स्तोत्र का गायन करो।ऋग्वेद 6/61/10 के अनुसार सरस्वती के स्तुतिगायकों ने अपने पूर्वजों द्वारा भी इसके स्तुति का उल्लेख किया है। इससे भी सरस्वती तट पर वैदिकों के निवास की प्राचीनता का संकेत मिलता है।कतिपय विद्वान कहते हैं, भरतों की आदिम वासभूमि सरस्वती तटवर्त्ती भूमि (सारस्वत प्रदेश) ही थी जहां उन्होंने सर्वप्रथम यज्ञाग्नि जलाई थी।

मैकडानल के अनुसार भी सूर्यवंशियों की प्राचीन वासभूमि भी जलाई थी, किन्तु विद्वानों के अनुसार सरस्वती के उद्गम स्थान पर हिमराशि का गलकर समाप्त हो जाने, जलग्रहण क्षेत्र से ही अन्य नदियों के द्वारा सरस्वती के जल का कर्षण कर लिये जाने आदि भौगोलिक कारणों से ख्य्यातिप्राप्त और पुण्यतमा सरस्वती का प्रवाह बहुधा परिवर्तित होता रहता था।

कर्षण और सरस्वती

सम्भवतः उद्गम स्थल से सरस्वती का जल यमुना ने ही सबसे अधिक कर्षित किया होगा। इसी कारण यह मान्यता बनी कि प्रयाग में यमुना के साथ ही गुप्त रूप से सरस्वती भी गंगा में मिलती है।भौगोलिक कारणों से सरस्वती वैदिक काल में ही क्षीण होते–होते सूखने भी लगी थी।फलतः उस समय तक उसका जो धार्मिक–आध्यात्मिक महत्व कायम हो चुका था वह तो आगे भी मान्य रहा,परन्तु उसका सामाजिक–आर्थिक,आधिभौतिक महत्व घटता गया।

उत्तर वैदिक कालीन साहित्यों में धार्मिक–आध्यात्मिक दृष्टियों से सरस्वती एवं उसके तटवर्ती स्थानों के उल्लेख अंकित हैं,लेकिन आधिभौतिक महत्व के साक्ष्यों का प्रायः अभाव ही है।लाट्टायानी श्रौतसूत्र में कहा है–

सरस्वती नाम नदी प्रत्यकस्त्रोत प्रवहति,
तस्याः प्रागपर भागौसर्वलोके प्रत्यक्षौ ,
मध्यमस्तभागः भूम्यन्तःनिमग्नः प्रवहति,
नासौ केनचिद् तद्विनशनमुच्यते ।।

–लाट्टायन श्रौतसूत्र 10/15/1

अर्थात् सरस्वती पश्चिमोभिमुख हो प्रवाहित होती है। उसका आरम्भिक एवं अन्तिम भाग सबके लिये दृश्य है। मध्यभाग पृथ्वी में अन्तर्निहित है जो किसी को भी दिखलाई नहीं पड़ता। **क्रमशः**

श्रीविष्णु मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

गीताश्रम परिसर, होजाई (असम), 15 फरवरी। श्रीविष्णु मंदिर–प्राणप्रतिष्ठा अनुष्ठान का भव्य आयोजन। मञ्चस्थ म. म. स्वामी यतीन्द्रानन्द गिरि जी माननीय सुरेश सोनी जी (सहसरकार्यवाह) तथा माननीय हिमंत विश्वशर्मा जी(शासकीय मंत्री) । विशाल जनसमुदाय..... । ajeyakp@gmail.com

'रीविजटिंग द सोसायटी एण्ड कल्चर ऑफ उत्तरपूर्व भारत' विषयक दो दिवसीय सेमिनार भारतीय इतिहास संकलन समिति असम ने आईसीएचआर, पाण्डु कालेज व गुवाहाटी विश्वविद्यालय के सहयोग से पहीनघर दत्त सेमिनार हाल गुहावाटी विश्वविद्यालय में आयोजित की जिसका उद्घाटन डॉ0 मृदुल हजारिका उपकुलपति, गुवाहाटी विश्वविद्यालय ने किया। (22, 23 फरवरी)

प. उत्तर प्रदेश

अलीगढ़ 22 फरवरी। कावड़िया डी जे नहीं बजा सकेंगे। ऐसा तुगलकी फरमान अलीगढ़ प्रशासन ने सुनाया है, इसको लेकर बजरंगदल ने प्रशासन का विरोध किया है

विहिप के विभाग मंत्री रामकुमार आर्य ने जिलाधिकारी अलीगढ़ से इस प्रतिबंध का कारण फोन द्वारा पूछा तो डीएम महोदय ने यह कहकर फोन काट दिया कि इस विषय पर फोन पर बात नहीं कर सकता, कल डीएम कार्यालय कलक्ट्रेट आकर बात करें।

जिला संयोजक केदारसिंह, प्रखंड संयोजक रूपेश जी, जिला सहमंत्री परवीन भरद्वाज, ललित जी, राहुल गुप्ता कार्यकर्ताओं ने विरोधस्वरूप ज्ञापन दिया।

अमरोहा, 22 फरवरी। विहिप बजरंगदल की और से डीएम को प्रस्तुत ज्ञापन में मांग की गई कि मंदिर के आसपास साफ सफाई, कावड़ियों की सुरक्षा व्यवस्था तथा जिले में शिवरात्रि तक मीट की दुकानें बंद की जाएं।

ज्ञापन देने वालो में राजकमल यादव जिला कार्यवाह यादव जी, गंगा समग्र के सहप्रान्त संयोजक पवनकुमार चौहान उपस्थित रहे।

20 फरवरी। विश्व हिन्दू परिषद बजरंगदल जनपद अमरोहा उ0प्र0 द्वारा पश्चिम बंगाल में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध वहां राष्ट्रपति शासन लगाने हेतु जिलाधीश को ज्ञापन सौपते विहिप के जिला मंत्री राजेश राणा।

ranarajesh327@gmail.com

हितचिंतक सम्मेलन

26 फरवरी को विहिप गुवाहाटी महानगर का हितचिंतक सम्मेलन गुवाहाटी स्थित पानबाजार कार्यालय में आयोजित किया गया। प्रखण्ड के सभापति व संपादकों ने हिस्सा लिया। महानगर की जन्माष्टमी समारोह समिति के संपादक दिलीप बोरा ने साधारण सभा में पिछले साल का आय– व्यय ब्यौरा रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित कर दिया।

महानगर की आगामी गतिविधियों विशेष तौर पर अप्रैल महीने में परिषद की ओर से राम समारोह का विशाल आयोजन करने के लिए कार्यकर्ताओं को जानकारी दी गई। समाज में असामाजिक शक्तियों के द्वारा बढ़ते अपराध और समाज को होनेवाली परेशानियां और उसका निराकरण कैसे हो, इस पर क्षेत्र मंत्री अजीत कुमार जाना ने विचार रखे। उ0पूर्व प्रांत सभापति डॉ0 मुनीन्द्र मोहन डेका ने धर्मरक्षा निधि जो कि परिषद का महत्वपूर्ण व वार्षिक कार्यक्रम है, उसे बेहतर तरीके से मनाने हेतु अपने विचार रखे। महानगर उपसभापति शांति सिंह, संघ के महानगर कार्यवाह हितेश चक्रवर्ती, भाजपा महानगर सभापति विचित्र नारायण कलिता, संघ के प्रांत व्यवस्था प्रमुख कृष्ण गोयनका सहित गणमान्य लोग सम्मेलन में उपस्थित रहे। abhishek_singh2009@hotmail.com

हिंदुत्वमय पुण्यभूमि का विमोचन

(गोवा 16 फरवरी, 2017)
manojbjd@gmail.com

नई दिल्ली, १८ फरवरी २०१७ को विहिप के अंतरराष्ट्रीय महामंत्री दिनेश चंद्र जी ने हिंदुत्वमय पुण्यभूमि का विमोचन किया। विहिप के केंद्रीय मंत्री जुगल किशोर ने संकलन किया है।

इस पुस्तक में हिन्दू धर्म तथा अपना देश पुण्यभूमि भारत के संबध में संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण जानकारियां प्रबुद्ध–जनों तक पहुँचाने का प्रयास है। दिनेश जी ने कहा कि इस्लामिक तथा मिशनरी षडयंत्र को विफल करने में यह पुस्तक सकारात्मक उत्तर है। उन्होंने

जुगल किशोर जी के इस प्रयास की सराहना करते हुए उपस्थित सज्जनों का आह्वान किया कि सब लोग इसी तरह से प्रयास करें।

कार्यक्रम में विश्व हिन्दू परिषद् – धर्मप्रसार के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वदेशपाल एवं धर्मनारायण शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति थी।

niraj-sahoo@gmail.com

दिल्ली में झण्डेवाली माता का वार्षिकोत्सव

श्री बद्रीभगत झण्डेवाली माता मंदिर, दिल्ली में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष 34वाँ वार्षिकोत्सव एवं 56 प्रकार का मां को भोग अर्पण किया। 12 फरवरी 2017 दिन रविवार प्रातः 7:00 बजे से 9:00 बजे तक मोहन दुर्गा संकीर्तन मण्डल ने मां का गुणगान किया, उसके बाद झण्डेवाली मां का श्रंगार मोहन दुर्गा संकीर्तन मण्डल द्वारा किया गया। तत्पश्चात् भण्डारा प्रारम्भ हुआ। 10:00 बजे से 12:00 बजे तक सेवादार संकीर्तन मण्डल द्वारा मां का गुणगान किया गया। कन्याओं का पूजन किया गया एवं उनके द्वारा ही मां का 56 भोग प्रसाद मुख्य दरबार पर भेजा गया।

चम्पत राय जी–महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद, कुलभूषण आहूजा, दौलतराम जी, रविंदर गोयल, विनोद गांधी–ट्रस्टी झण्डेवाला टेम्पल सोसायटी का देवेन्द्र कपूर, गुलशन मारवाह, सुदर्शन लूथरा, राजन ग्रोवर,

शेष पृष्ठ 17 पर....

अन्नदान कर लोगों को दें जीवनदान

- डा. प्रवीण तोगड़िया

जयपुर, 24 फरवरी । 'महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर बेसहारा, गरीब, असहाय लोगों के लिए अन्नदान कर उन लोगों तक अन्न पहुंचाकर उनका पेट भरना ही हिन्दू धर्म की सच्ची सेवा है।'

ये विचार विश्व हिन्दू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया ने जयपुर प्रान्त के दो दिवसीय दोरे पर दुर्गापुरा स्थित श्रीराम पार्क, जैन मन्दिर शान्ति नगर में विहिप की ओर से चलाये जा रहे 'एक मुठ्ठी अनाज' के कार्यक्रम की सभा में कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने प्रत्येक कार्यकर्ता को हर रोज हर घर से एक मुठ्ठी अनाज लाने का संकल्प दिलाया।

कार्यक्रम में विहिप के प्रान्त कार्यकारी अध्यक्ष सुभाष सैनी, प्रान्त मंत्री किशोरी लाल मीणा, बजरंग दल प्रान्त संयोजक अशोक सिंह राजावत, जयपुर महानगर कार्यकारी अध्यक्ष अर्जुन सिंह सिसोदिया, हिन्दू हेल्प लाईन प्रान्त संयोजक निलेश पुरोहित सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

vhpravindra21@gmail.com

सेवा विभाग प्रशिक्षण वर्ग

जयपुर, 26 फरवरी । विश्व हिन्दू परिषद के आयाम सेवा विभाग का दो दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग ढहर के बालाजी सियारामदास जी की बगीची में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष महन्त श्री हरिशंकर दास जी महाराज ढहर के बालाजी सियारामदास जी की बगीची थे।

मुख्य वक्ता केन्द्रीय सहमंत्री आनन्द प्रकाश गोयल ने बताया कि पिछड़ी बस्तियों में जहाँ धर्मान्तरण की गतिविधियाँ ज्यादा होती है वहाँ सेवा कार्यों का विस्तार होना चाहिए। कार्याध्यक्ष सुभाष सैनी, प्रान्त मंत्री किशोरी लाल मीणा ने भी सम्बोधित किया।

vhpravindra21@gmail.com

पोस्टर प्रतियोगिता

जयपुर 27 फरवरी । विज्ञान भारती सांगानेर की ओर से आयोजित नवोन्मेष 2017 मॉडल, प्रोजेक्ट एवं पोस्टर प्रतियोगिता का उद्घाटन माननीय पुरुषोत्तम परांजये संरक्षक विज्ञान भारती राजस्थान, श्री देवीनारायण पारीक संरक्षक विज्ञान भारती सांगानेर, संजय बंसल अध्यक्ष विज्ञान भारती, निदेशक जेआटी रवि गोयल, अशोक कंदोई के साथ फीता काटकर एवं माँ सरस्वती के सामने दीप प्रज्ज्वलन कर किया।

vhpravindra21@gmail.com

महाशिवरात्रि पर श्री गुप्तेश्वर महादेव का दुग्धाभिषेक

राजसमन्द (राज.), 25 फरवरी। नगर परिषद क्षेत्र के वार्ड 26 स्थित 965 वर्ष प्राचीन गुप्तेश्वर महादेव मंदिर में महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव भक्तों की ओर से पण्डित बिंदुलाल सनाढ्य एवं पार्षद कुशलेन्द्र दाधीच के सान्निध्य में गुप्तेश्वर महादेव मंदिर में शिव भक्तों द्वारा 1151 लीटर दूध का भोग लगाकर प्रसाद के रूप में वितरण किया गया।

दूध प्रसाद वितरण का शुभारम्भ नगर परिषद सभापति सुरेश पालीवाल, पार्शद कुशलेन्द्र दाधीच, साहित्यकार त्रिलोकी मोहन पुरोहित, कांकरोली थाने

कैंसर पर सेमिनार

जयपुर 24 फरवरी। भगवान महावीर कैन्सर चिकित्सालय के तत्वावधान में आयोजित इंडो ग्लोबल समिट ऑन हैड एवं नेक कैंसर सेमीनार का उद्घाटन अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ0 प्रवीण तोगड़िया मुख्य अतिथि व स्वास्थ्य मंत्री कालीचरण सर्राफ विशिष्ट अतिथि के द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस सम्मेलन में करीब 700 अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय चिकित्सक भाग ले रहे हैं।

डॉ. प्रवीण तोगड़िया जो कि स्वयं एक ख्यातिप्राप्त कैंसर सर्जन भी हैं एवं विश्व हिन्दू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष हैं, ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हैं, जानकारी दी कि मुंह एवं गले के कैन्सर के 90 प्रतिशत रोगी ग्रामीण परिवेश के एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के होते हैं। कैन्सर की जांच एवं उपचार सुविधाएं अधिकांश शहरों में उपलब्ध न होने से ग्रामीण रोगियों के इलाज में देरी होती है। उन्होंने कैन्सर के बारे में जनजागरुकता के अभियान में सरकारी एवं गैरसरकारी, स्वयंसेवी संस्थाएं चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े हुये प्रत्येक भारतीय नागरिक से जुड़ने का आहवान किया।

डॉ पी एस लोढ़ा ने बताया कि डॉ. प्रवीण तोगड़िया प्रत्येक माह जनकल्याणार्थ करीब 25 दिन यात्रा करते हैं। उन्होंने लगभग 12000 कैन्सर के सफल ऑपरेशन भी किये है। उन्होंने भारत में एक मिशन "हैल्थी नेशन – हैप्पी नेशन" भी शुरु किया है जिसमें स्वास्थ्य, शिक्षा एवं निम्नवर्ग के लोगों के लिये 60,000 प्रोजेक्ट चल रहे हैं, करीब 51000 गांवों के बीस लाख से अधिक बच्चों को प्राथमिक शिक्षा एवं एक लाख से अधिक विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में पूर्ण मदद मिल रही है।

कालीचरण जी सर्राफ, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मन्त्री विशिष्ट अतिथि ने उपस्थित लोगों एवं मीडियाकर्मियों से कैन्सर की रोकथाम में तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा के दुष्परिणामों के बारे में जनचेतना द्वारा कैन्सर के रोकथाम पर विशेष जोर दिया।

टाटा मेमोरियल अस्पताल मुम्बई के डाईरेक्टर डॉ0 अनिल डीक्रूज, पूर्व डाईरेक्टर डॉ0 पी बी देसाई, डॉ0 डीडी पटेल, डॉ0 राजागोपाल, डॉ0 पीटर, डॉ0 जैम्स, डॉ0 डेनियल, डॉ0 नेक्यूब, मैक्स अस्पताल, दिल्ली के डॉ0 हरित चतुर्वेदी, बेंगलौर के डॉ0 अय्यर ने अपने व्याख्यान दिए।

आज हुई चर्चाओं में मुँह एवं गले के कैंसर का जल्द अवस्था में आधुनिक जांचों से पता लगाना, विभिन्न प्रकार के जटिल ऑपरेशन की बारीकियों पर गहन चर्चा हुई । कीमोथैरेपी की नवीनतम जानकारियॉ, इम्यूनोथेरेपी का कैंसर में प्रयोग, रेडियोथैरेपी की अत्याधुनिक मशीन एवं तकनीक पर भी काफी चर्चा हुई। इन नवीनतम सुविधाओं एवं तकनीक को राजस्थान के आमजन को लाभ पहुँचाने की बात पर जोर दिया गया।

राजस्थान मूल के डॉ0 भागवत माथुर जो कि अभी लन्दन में प्लास्टिक सर्जरी के अध्यक्ष हैं, ने भी विदेशों में चल रही नवीनतम सर्जरी के बारे में बताते हुए प्रकाश डाला कि कैंसर की गांठ निकलने के बाद प्लास्टिक सर्जरी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे कैन्सर ग्रसित अंग की पुनःसरंचना कर वापस पहले जैसा बनाया जाना सम्भव है।

vhpravindra21@gmail.com

के सीआई लक्ष्मण राम विश्नोई, पार्शद हिम्मत मेहता, हेमंत रजक, प्रकाश गमेती, भारत विकास परिषद अध्यक्ष राकेश गोयल व युवा समाजसेवी मुकेश कंसारा के सान्निध्य में किया गया। मिल्क रोज, गन्ने का रस व फरियाली साबुदाना खिचड़ी व नारंगी फल का प्रसाद भी वितरण किया गया।

kushal.dadheech@gmail.com

कर्नाटक में गौ सत्याग्रह

गौहत्या पर पूर्णबन्दी की मांग करते हुए कर्नाटक के 40 जिलों में 26 फरवरी को गौ सत्याग्रह गौ आन्दोलन समिति के तत्वावधान में आयोजित किया जिसमें छः हजार लोग सहभागी हुए। विहिप व हिन्दू जागरण वेदिके की इसमें प्रमुख भूमिका रही। शिमोगा में भद्रगिरि श्री मुरुगेश स्वामी, श्री नमदेवानन्द स्वामीजी, श्री कृ सिद्धेश्वर स्वामीजी, हिरमुर मठ के श्रीलक्ष्मी नारायण स्वामीजी सहित अनेक संतों की सहभागिता रही। (सुनील डुग्गर की रिपोर्ट के अनुसार)

बेंगलूरू के टाउनहाल में एक हजार गौभक्तों के साथ श्री नारायणानंद सरस्वती जी व श्री अहिल्या मठ के श्री आत्मानन्द सरस्वती जी भी सहभागी हुए। (राघवेन्द्र की रिपोर्ट के अनुसार)

sureshabe29@gmail.com

पृष्ठ 15 का शेषांश....

द्वारा स्वागत किया गया।

मुख्य वक्ता चम्पत राय ने मां की पूजा व अर्चना भक्ति और गौ–माता के विषय में भक्तों को जानकारी दी। कुलभूषण आहूजा ने मंदिर की योजनाओं के बारे विस्तार से जानकारी दी। प्रस्तुति : केशव सिंह

सर्जिकल स्ट्राइक

''दवा बिना रोगों का एनकाउंटर कीजिए और तंदुरुस्त रहें''

विशिष्ठता

- विश्व में पहली बार। पूर्णतः वैज्ञानिक
- रोगों की भ्रामकता दूर होगी और उपाय आपके पास होगा
- आप जरुरत से ज्यादा प्रोटीन ले रहे हो, जिसके कारण आपके यूरिन में एसिडिटी है
- सप्ताह में एक बार पूरे परिवार का यूरिन टेस्ट अवश्य करें और खुराक के माध्यम से जोड़ो के दर्द के अलावा अनेक (शायद सभी) रोगों से मुक्त हों।
- केंसर में भी फायदा हो सकता है। मामूली कीमत में पूरा परिवार निरोगी रहेगा

किट

पुस्तक में रोगों का इलाज और बहुत कुछ + 120 यूरिन स्ट्राइप्स

`300 में एक किट, लेकिन `1000/– में 6 किट मिलेगी

आपका कार्य पैसा भेंजे

मनी आर्डर/राष्ट्रीयकृत बैंक चैक/NEFT से
हर्षद पंडित देना बैंक ज्वाइंट एकाउंट सं /019610002161 IFC BKD 310196

एसएमएस करें
मोबाइल 9428299637 पर जिस में राशि/तिथि, आपका पता
किट की भाषा (हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी) की जानकारी अवश्य लिखें।

राष्ट्रीय आरोग्य का भेखधारी
डॉ. हर्षद पंडित, M.V.SC. (Medicine)
'ओम' 4, करणपरा, राजकोट–36001 (गुजरात)

लक्ष्य रोग मुक्त भारतीय।

राष्ट्रीय समर्पण

- राष्ट्रीय कार्य के लिए 101 लाख+
- शहीद फंड के लिए 26 लाख+
- 11,000/– हर माह पेंशन से

ललकार जिन्हें भारत पर गर्व है, वह सहकार देकर आरोग्य शिविर का आयोजन करें।

Email: drharshadpandit@gmail.com Website: www.rejuvenatewithoutmedicine.com

महिला सशक्तिकरण का अभियान बन गया एकल अभियान : श्यामजी गुप्त

रांची (झारखण्ड), 23 फरवरी । 'गाँव जग रहा है, अब देश जगेगा। गाँव ही भारत की असली पहचान एवं ताकत है। जिन गांवों में एकल अभियान चल रहा है, वे गाँव आज सशक्त गाँव, स्वाभिमानी गाँव, स्वावलंबी गाँव बनकर उभर रहा है। अंचल प्रणाम कार्यकम ने यह प्रमाणित कर दिया है।'

ये बातें एकल अभियान के संस्थापक सदस्य एवं अभियान के प्रणेता श्याम जी गुप्त ने कही। रांची स्थित केन्द्रीय मनोचिकित्सा एवं शोध संस्थान कांके (रिनपास) के न्यू एकेडमिक सभागार में "एकल अभियान उभरता परिश्य" विषय पर 21 फरवरी को एकल संस्थान रांची द्वारा आयोजित संगोष्ठी में श्री गुप्त मुख्यवक्ता के रूप में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि आज 55 हजार एकल विद्यालय चल रहे हैं। इन एकल विद्यालयों में 15 लाख बच्चे पढ़ रहे हैं, लगभग इतने ही बच्चे एकल विद्यालयों से पढ़ निकल चुके हैं। इन विद्यालयों में 55 हजार एकल आचार्य हैं, इसके अतिरिक्त 50 हजार "एकल आचार्य" की भूमिका निभा कर अन्य कार्यों में लगे हैं। एक लाख आचार्यों में से 80 हजार आचार्य बहनें हैं। एकल अभियान में महिलाओं की सहभागिता, इनकी सक्रियता गाँव की उन्नति के लिए प्रेरणा दे रही है। एकल अभियान महिला सशक्तिकरण का अभियान बन गया है। आज की शिक्षा बच्चों में कैरियर पैदा कर रही है, जबकि एकल अभियान में जो शिक्षा दी जा रही है, वह उन बच्चों के माँ–बाप को भी प्रेरित कर रही है।

श्री गुप्त ने कहा कि जब जम्मू कश्मीर की घाटी में पत्थर बाजी की घटना हुई तो उन 270 गांवों के लोग जहाँ एकल विद्यालय संचालित है, उनमें से कोई भी युवक पत्थरबाजी में शामिल नही हुआ। उन पर पत्थर फेंकने के लिए बहुत दवाब बनाया गया था, परन्तु उन्होंने कहा कि हम अलगावाद स्वीकार नहीं कर सकते। एक दिन ऐसा आयेगा जब सैनिकों पर पत्थर फेंकने वाले लोग फूलों की वर्षा करेंगे।

"एकल अभियान उभरता परिदृश्य" संगोष्ठी की अध्यक्ष एकल संस्थान की राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. मंजुश्री ने कहा कि एकल संस्थान एक "पॉवर बैंक" है। यह प्रबुद्ध वर्ग की ताकत है। झारखण्ड एकल की गंगोत्री है।

प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए सेवानिवृत आई.ए.एस.अधिकारी एवं एकल संस्थान रांची के संरक्षक वैदेही शरण मिश्रा ने कहा कि एकल अभियान के 28 वर्ष हो चुके हैं। इसके उभरते परिदृश्य से अवगत होने की आवश्यकता है।

बिनोवा भावे विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं एकल संस्थान रांची उपाध्यक्ष प्रो.एम.पी.सिंह ने कहा कि देश में सबसे बड़ी मजबूरी गरीबी है और इस मजबूरी को दूर करने का उपाय शिक्षा है जो एकल अभियान के माध्यम से हो रहा है।

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के शिक्षा प्रसार निदेशक एवं एकल संस्थान के सलाहकार समिति के सदस्य प्रो.आर. पी.सिंह रतन ने कहा कि एकल संस्थान जीवन और मानव निर्माण का काम कर रहा है। झारखण्ड उच्च न्यायालय के अपर महाधिवक्ता एवं एकल संस्थान रांची के सलाहकार समिति के सदस्य हिमांशु मेहता ने कहा कि एकल अभियान अब गांवों से निकलकर अन्तरराष्ट्रीय फलक पर पहुँच गया है। इसकी चर्चा अब इंग्लैंड के बर्मिन्घम में भी होती है। रिनपास के निदेशक डॉ.सुभाष सोरेन ने ग्रामीण शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण को भी जोड़ने की सलाह दी।

एकल विद्यालय से पढ़ी हुई पूर्ववर्ती छात्रा सुश्री कल्पना कुमारी एवं छात्र शाशोधर ने अपनी सफलता की कहानी सुनाई। सुश्री कल्पना कुमारी ने अपने मार्मिक प्रसंगों का वर्णन करते हुए कहा कि मैंने एकल विद्यालय से ही अपनी पढ़ाई शुरु की जिसके कारण प्रत्येक कक्षा में अव्वल रह कर, आज बी. टेक की पढ़ाई कर रही हूँ। वहीं शाशोधर ने कहा कि मैंने भी एकल विद्यालय से ही पढ़ाई शुरु किया और अब डिप्लोमा इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी कर रहा हूँ। इन्हीं एकल की पूर्ववर्ती छात्र–छात्रा द्वारा माँ सरस्वती एवं भारत माँ के तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया। एकल अभियान के हरिकथा के आचार्य कथाकारों द्वारा भजन प्रस्तुत किया गया।

मंच संचालन प्रो.सोनी तिवारी एवं धन्यवाद ज्ञापन एकल संस्थान रांची के संयुक्त सचिव अधिवक्ता विजय शंकर प्रसाद ने किया। संगोष्ठी में रांची शहर के कई चिकित्सक, प्राध्यापक, इंजीनियर, अधिवक्ता, रिनपास के शोधार्थी विद्यार्थी, पत्रकार, व्यवसायी, सामाजिक कार्यकर्ता बंधु–भगिनी आदि भी शामिल थे।

प्रस्तुति – अमरेन्द्र विष्णुपुरी
amarendra.vishnupuri@gmail.com

अरकी गांव, खूंटी जिला के (झारखण्ड) में 21 परिवारों के 105 सदस्य सनातन हिन्दू धर्म में स्वेच्छया वापिस आए। hindurastra.keshavaraju@gmail.com

विश्व हिन्दू परिषद

2016 में सम्पन्न कार्यक्रमों का संक्षिप्त कार्य-विवरण

कुंभ आयोजन

उज्जैन में इस वर्ष पूर्ण कुंभ तथा हरिद्वार में अर्द्धकुंभ का प्रसंग था। दोनों स्थानों पर शिविर लगे। उज्जैन कुंभ में रामकथा, गोकथा, गोसेवक सम्मेलन, मालवा प्रांत के युवाओं का सम्मेलन तथा दुर्गावाहिनी की बहिनों का सम्मेलन हुआ। सामाजिक समरसता कार्यकर्ताओं का अखिल भारतीय सम्मेलन, धर्मयात्रा महासंघ द्वारा तीर्थस्थानों के कार्यकर्ताओं का चिंतन वर्ग तथा मार्गदर्शक मण्डल की बैठकें सम्पन्न हुईं। शिविर में प्रवेश करने वाले सभी तीर्थयात्रियों को दोनों समय का भोजन और रात्रिनिवास उपलब्ध था। हरिद्वार अर्द्धकुंभ में भी सामाजिक समरसता सम्मेलन हुआ, उत्तराखण्ड के ग्रामों से गंगास्नान करने पधारे ग्रामदेवताओं की डोलियों का निवास, स्वागत, प्रसाद की व्यवस्था की गई।

उज्जैन में केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल के द्विदिवसीय उपवेशन में देशभर से 150 पूज्य संतों की उपस्थिति रही। 3 मई को शीर्षस्थ पूज्य धर्माचार्यों की चिंतन बैठक में 32 पूज्य संतों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। सामाजिक समरसता, हिन्दू समाज की घटती जनसंख्या, घर-परिवार में संस्कारों-परम्पराओं का संरक्षण और गोसेवा, गोसंरक्षण पर संतों ने अपने विचार रखे।

विशेष सम्पर्क कार्य

सांसद संपर्क (दिल्ली में, विषय-परिषद के सेवा कार्य एवं एकल अभियान)-25 से 29 जुलाई, 01 से 05 अगस्त तथा 08 से 12 अगस्त, 2016 तक तीन चरणों में हुआ। परिषद कार्यकर्ताओं द्वारा देशभर में चलाए जा रहे सेवाकार्यों तथा एकल अभियान की जानकारी सांसदों को मानसून सत्र में दी गई। इस कार्य के लिए सभी प्रांतों से कार्यकर्ता दिल्ली आए। अपने-अपने प्रांतों के सांसदों से समय लेकर, उनके आवास पर जाकर मिले। 440 सांसदों से भेंट हुई।

दिल्ली में बसंतपंचमी पर सामान्य ज्ञान परीक्षा एवं रंग भरो प्रतियोगिता में दक्षिणी दिल्ली के कक्षा एक से दस तक के 192 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। दिल्ली में 08 अप्रैल को बसन्त विहार क्षेत्र के कक्षा 1 से 10 तक के लगभग 110 बालक-बालिकाओं ने ललित महाजन सरस्वती विद्या मंदिर के प्रांगण में एकत्र होकर खेलकूद कार्यक्रम में भाग लिया। जिसमें 100 मीटर दौड़, बाधा दौड़, रस्सा दौड़, तीन टांग की दौड़, कक्षा एक-दो के बालक-बालिकाओं के लिए बैलून ब्रेकिंग, स्वीट कलेक्शन की प्रतियोगिताएं हुईं। **क्रमश:**

वनवासी रक्षा परिवार मिलन

नई दिल्ली, 3 मार्च। वनवासी रक्षा परिवार फाउण्डेशन के तत्वावधान में सिरीफोर्ट सभागार में वनवासी रक्षा परिवार मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। विधि, न्याय, सूचना व प्रौद्योगिकी मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि भारत को बनाने वालों को देख रहा हूं। भारतीय चिंतन, भारतीय संस्कृति को दुबारा जागरूक करने की जरूरत है।

एकल अभियान के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि जो कार्य ईश्वरीय होता है, वह कार्य अपने आप बढता जाता है। एकल अभियान के अ0भा0 ग्राम संगठन प्रमुख वीरेन्द्र कुमार ने संस्था का उद्देश्य बताते हुए कहा कि 2019 तक साढ़े आठ हजार गांवों में दिल्ली के सहयोग संस्कार केन्द्र खोले जायेंगे।

ध्यान रहे वनवासी रक्षा परिवार फाउण्डेशन के 50,000 से अधिक वनवासी गांवों में संस्कार केन्द्र चल रहे हैं। नगरीय परिवार वनवासी गांवों को गोद लेने हेतु आर्थिक सहयोग करते हैं।

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण श्रीमती हेमामालिनी व सहयोगी कलाकारों द्वारा तीन भागों में प्रस्तुत संगीतमयी नृत्यनाटिका दुर्गा की प्रस्तुति रही है। उम्र के इस पडाव पर भी

तन्मयता पद–विन्यास, अभिव्यंजना लास्य इत्यादि की भावपूर्ण प्रस्तुति से हेमामालिनी ने लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

रमेश जुनेजा, डॉ0 अनूप कुमार मित्तल, मनोज अरोड़ा सहित अनेक गणमान्य लोगों ने भी सम्बोधित किया। वनवासी रक्षा परिवार योजना हेतु आर्थिक योगदान करने वाले महानुभावों का सम्मान भी किया गया।

– सम्पादक द्वारा

पृष्ठ 05 का शेषांश....

रहे हैं। अगर संघ से जुड़ा होना ही आधार है तो बड़ी मुश्किल होगी। अगर मैं संघ से जुड़ा रहकर प्रोफेसर रह सकता हूं तो इस विश्वविद्यालय का कुलपति भी बन सकता हूं।" (सीएनएन नेटवर्क 18 को दिए गए साक्षात्कार में बीएचयू के कुलपति जी.सी त्रिपाठी के बेबाक बोल) (जनसत्ता ऑनलाइन, 7 मार्च)

पृष्ठ 09 का शेषांश...

हिंदुओं को नरभक्षियों के तौर पर दिखाया–USINPAC

यूएस इंडियन पॉलिटकल एक्शन कमेटी(USINPAC)ने कहा, 'पूरे अमेरिका में भारतीय मूल के लोगों पर हमले की रिपोर्ट्स आ रही हैं। ऐसे वक्त में इस शो में हिंदुओं को इंसानी मीट खाने वालों के रूप में दिखाया जा रहा है।' 'दुनिया के तीसरे सबसे बड़े धर्म के बारे में ये नजरिया बेहद अजीब है।'

शो पर रोक लगाने की अपील की

USINPAC ने CNN से इस शो के टेलिकास्ट में रोक लगाने की अपील की है। USINPAC ने कहा, 'हम लोग इस बात से बेहद निराश हैं। इंडियन अमेरिकन कम्युनिटी ने इस शो को लेकर गहरी चिंता जताई हैं। हमें बड़ी तादाद में ईमेल और कॉल्स आई हैं, जिसमें शो को लेकर बात की गई।' कमेटी के चेयरमैन संजय पुरी ने कहा, 'अमेरिका में जिस तरह के हालात हैं, उसे देखते हुए इस तरह के शो इंडो–अमेरिकंस के बारे में गलत राय बनेगी। नतीजतन इंडो–अमेरिकनस ज्यादा हमलों का शिकार होंगे।' अमेरिकन हिंदू अगेंस्ट डिफेमेशन से जुड़े अजय शाह ने कहा, 'ये शो विदेशियों को लेकर डर पैदा करेगा, हिंदुओं को लेकर डर पैदा करेगा।' (भास्कर, 6 मार्च)

पृष्ठ 07 का शेषांश....

मार्च) को डीपीए न्यूज एजेंसी से कहा विद्यालय के टीचर और छात्र मुस्लिम छात्रों के आचरण के कारण से दबाव अनुभव करते थे। रिपोर्ट के अनुसार विद्यालय प्रवक्ता ने कहा, पिछले कुछ समय से ये साफ दिख रहा था मुस्लिम बच्चे दूसरों के सामने ही प्रार्थना कर रहे हैं, बाथरूम में वजू (हाथ–पैर धोना) कर रहे हैं, सबके सामने अपने जानमाज को लपेटते थे, अपने शरीर को एक खास मुद्रा में मोड़ते थे। विद्यालय में इसकी अनुमति नहीं है।

नगरपालिका अधिकारियों ने कहा कि विद्यालय को बच्चों को इससे रोकने का अधिकार है। हालांकि स्थानीय प्रशासन ने कहा है कि वो विद्यालय के निर्णय के साथ है। (जनसत्ता, 4 मार्च)

पाठकीय अभिमत

प्रेरणादायी पत्रिका

बुरहानपुर (म0प्र0), 20 जनवरी। आपके कुशल सम्पादन में 'हिन्दू विश्व' पाक्षिक पत्रिका बहुत ही दिव्य, अनूठी, सरल, सारगर्भित, सराहनीय, संग्रहणीय, प्रेरणादायी, समस्त मानव जाति को सही दिशा दे रही है। हिन्दू– आर्य सनातन संस्कृति की धरोहर है। आपको साधुवाद! धन्यवाद! सादर शुभकामना स्वीकार करें तथा इस पत्र को अपनी पत्रिका में छापने का कष्ट करें।

आपसे निवेदन है कि हमारे निराश्रित हरिजन आदिवासी छात्रावासी छात्रों हेतु छात्रावास को हर वर्ष प्रतिमाह 'हिन्दू विश्व' पत्रिका की एक प्रति निःशुल्क प्रदान करने की कृपा करें। हमारे सभी छात्र निर्धन निराश्रित हैं जो शुल्क देने में असमर्थ हैं। उक्त पत्रिका से छात्रों को एक नई दिशा मिलेगी व आपका त्याग निरर्थक नहीं जायेगा!

– सुंदरलाल प्रह्लाद चौधरी
अधीक्षक पोस्टमैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास,
बुरहानपुर–450 331 (म0प्र0)

महाकवि दशम् गुरू गोबिन्द सिंह जी

गतांक से आगे...

जब जब दानव करत पसारा।
तब तब बिश्न करत संहारा।।

मत्स्य अवतार में शंखासुर के वध वर्णन करते हुए गुरुजी अवतार के उद्देश्य को और भी स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि––

''शंखासुर मारे वेद उधारे शत्रु संधारे जसु लीनो।।''

और काल के अवतार में बड़े ही सरल भाव से अवतार के कालरूप वर्णन इस प्रकार करते हैं––

शत्रुन के नासार्थ निमित्त अवतार अवतारि।।''
जग पाप समूह विनासन कउ कलि की अवतार कहावहिंगे।।
भल भाग गया है सम्भल के हरि जू हरि मंदर आवेंगे।।

24 अवतारों की लीलाओं को अपने काव्य में कहते हैं कि प्रभु पूर्व जन्मों में जो दृश्य मैंने अपनी आंखों से देखे उन्हें मैं, आपकी कृपा से प्रगट करना चाहता हूं।

जिह जिह विधि मैं लखै तमाशा।
चाहत बिन को कियो प्रकाशा।।
जो जो जन्म पुरवले हेरे।।
कहिहो सो प्रभु प्राक्रम तेरे।।

चण्डी चरित्र की रचना के पूर्व कहते हैं कि जैसे– जैसे मुझे पिछले जन्मों की सुधी आती जा रही है तैसे– तैसे मैं उन प्रत्यक्ष देखी भगवत लीलाओं को ग्रंथमय लिखता हूं।

जिह जिह विध जनमन सुधि आई। तिम तिम कहे ग्रंथ बनाई।
प्रथमे सतिजुग जिह विधि लहा। प्रथमे देवी चरित को कहा।।
पहले चंडी चरित्र बनायों रख नख ते क्रम भाखा सुनायों।।

गुरुजी को काव्य महानता उपमा वर्णन का एक रूप चण्डी चरित्र में आनंद देने और लेने वाला है।

''तरन लोक अधरिन सूमहि दैत संघारन चड तूही है।
कारन ईस कला कमला हरि अद्रसतुता जह देखो तू ही है।
तामस ता ममता नमता कविता कवि के मन महि गुही है।
कीनो है कचन लोह जगत मैं पारस मूरत जाहि हुई है।। **समाप्य**

जिस समय मराठा साम्राज्य पश्चिमी भारत में लगातार कमजोर होता जा रहा था, तथा औरंगजेब मराठाओं के किले–दर–किले पर अपना कब्जा करता जा रहा था, उस समय ताराबाई (1675–1761) ने सारे सूत्र अपने हाथों में लेते हुए न सिर्फ मराठा साम्राज्य को खण्ड–खण्ड होने से बचाया, बल्कि औरंगजेब को हार मानने पर मजबूर कर दिया।

छत्रपति शिवाजी के प्रमुख सेनापति हम्बीर राव मोहिते की कन्या ताराबाई का जन्म 1675 में हुआ, ताराबाई ने अपने पूरे जीवनकाल में मराठा साम्राज्य में शिवाजी के राज्याभिषेक से लेकर सन 1700 में औरंगजेब के हाथों कमजोर किए जाने, तथा उसके बाद पुनः जोरदार वापसी करते हुए सन 1760 में लगभग पूरे भारत पर मराठा साम्राज्य की पताका फहराते देखा और अंत में सन 1761 में पानीपत की तीसरी लड़ाई में अहमद शाह अब्दाली के हाथों मराठों की भीषण पराजय भी देखी। ताराबाई का विवाह आठ वर्ष की आयु में शिवाजी के छोटे पुत्र राजाराम के साथ किया गया।

छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक के कुछ वर्ष बाद ही 1680 में शिवाजी की मृत्यु हो गई। यह खबर मिलते ही औरंगजेब बहुत खुश हो गया। शिवाजी ने औरंगजेब को बहुत नुकसान पहुँचाया था, इसलिए औरंगजेब चिढ़कर उन्हें "पहाड़ी चूहा" कहकर बुलाता था। आगरा के किले से शिवाजी द्वारा चालाकी से फलों की टोकरी में बैठकर भाग निकलने को औरंगजेब अपनी भीषण पराजय मानता था, वह इस अपमान को कभी भूल नहीं पाया। इसलिए शिवाजी की मौत के पश्चात उसने सोचा कि अब यह सही मौका है जब दक्षिण में अपना आधार बनाकर समूचे पश्चिम भारत पर साम्राज्य स्थापित कर लिया जाए।

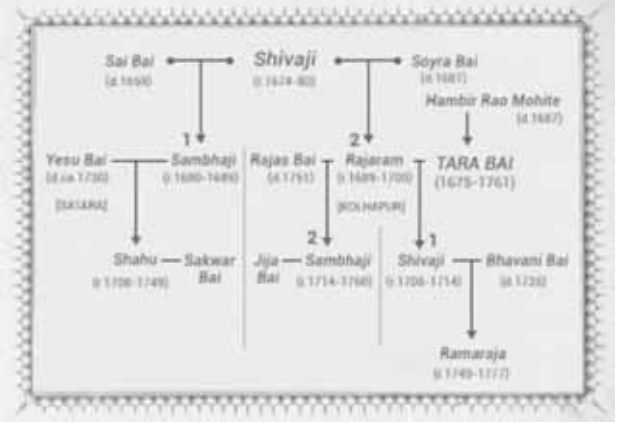

शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र संभाजी राजा बने और उन्होंने बीजापुर सहित मुगलों के अन्य ठिकानों पर हमले जारी रखे। 1682 में औरंगजेब ने दक्षिण में अपना ठिकाना बनाया, ताकि वहीं रहकर वह फौज पर नियंत्रण रख सके और पूरे भारत पर साम्राज्य का सपना सच कर सके। उस बेचारे को क्या पता था कि अगले 25 साल वह दिल्ली वापस नहीं लौट सकेगा और दक्षिण भारत फतह करने का सपना उसकी मृत्यु के साथ ही दफन हो जाएगा। हालाँकि औरंगजेब की शुरुआत तो अच्छी हुई थी और उसने 1686 और 1687 में बीजापुर तथा गोलकुण्डा पर अपना कब्जा कर लिया था। इसके बाद उसने

औरंगजेब से दो-दो हाथ करने वाली
मराठा वीरांगना ताराबाई

अपनी सारी शक्ति मराठाओं के खिलाफ झोंक दी, जो उसकी राह का सबसे बड़ा रोड़ा बने हुए थे।

मुगलों की भारीभरकम सेना की पूरी शक्ति के आगे धीरे–धीरे मराठों के हाथों से एक–एक करके किले निकलने लगे और मराठों ने ऊँचे किलों और घने जंगलों को अपना ठिकाना बना लिया। औरंगजेब ने विपक्षी सेना में रिश्वत बाँटने का खेल शुरू किया और गद्दारों की वजह से संभाजी महाराज को संगमेश्वर के जंगलों में 1689 में औरंगजेब ने पकड़ लिया। औरंगजेब ने संभाजी से इस्लाम कबूल करने को कहा, संभाजी ने औरंगजेब से कहा कि यदि वह अपनी बेटी की शादी उनसे करवा दे तो वह इस्लाम कबूल कर लेंगे, यह सुनकर औरंगजेब आगबबूला हो उठा. उसने संभाजी की जीभ काट दी और आँखें फोड दीं, संभाजी को अत्यधिक यातनाएँ दी गईं, लेकिन उन्होंने अंत तक इस्लाम कबूल नहीं किया और फिर औरंगजेब ने संभाजी की हत्या कर दी।

औरंगजेब लगातार किले फतह करता जा रहा था। संभाजी का दुधमुंहे बच्चा "शिवाजी द्वितीय" अब आधिकारिक रूप से मराठा राज्य का उत्तराधिकारी था। औरंगजेब ने इस बच्चे का अपहरण करके उसे अपने हरम में रखने का फैसला किया ताकि भविष्य में सौदेबाजी की जा सके। चूँकि औरंगजेब "शिवाजी" नाम से ही चिढ़ता था, इसलिए उसने इस बच्चे का नाम बदलकर शाहू रख दिया और अपनी पुत्री जीनतुन्निसा को सौंप दिया कि वह उसका पालन–पोषण करे। औरंगजेब यह सोचकर बेहद खुश था कि उसने लगभग मराठा साम्राज्य और उसके उत्तराधिकारियों को खत्म कर दिया है और बस अब उसकी विजय निश्चित ही है। लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा हो नहीं पाया।

संभाजी की मृत्यु और उनके पुत्र के अपहरण के बाद संभाजी का छोटा भाई राजाराम अर्थात ताराबाई के पति ने मराठा साम्राज्य के सूत्र अपने हाथ में ले लिए। उन्होंने महसूस किया कि इस क्षेत्र में रहकर मुगलों की इतनी बड़ी सेना से लगातार युद्ध करना संभव नहीं है, इसलिए उन्होंने अपने पिता शिवाजी से प्रेरणा लेकर, अपने विश्वस्त साथियों के साथ लिंगायत धार्मिक समूह का भेष बदला और गाते–बजाते आराम से सुदूर दक्षिण में जिंजी के किले में अपना डेरा डाल दिया। इसके बाद चमत्कारिक रूप से राजाराम ने जिंजी के किले से ही मुगलों के खिलाफ जमकर गुरिल्ला युद्ध की शुरुआत की। उस समय उनके सेनापति थे रामचंद्र नीलकंठ।

राजाराम की सेना ने छिपकर वार करते हुए एक वर्ष के अंदर मुगलों की सेना के दस हजार सैनिक मार गिराए और उनका लाखों रूपए खर्च करा दिया। औरंगजेब बुरी तरह परेशान हो उठा। दक्षिण की रियासतों से औरंगजेब को मिलने वाली राजस्व की रकम सिर्फ दस प्रतिशत ही रह गई थी, क्योंकि राजाराम की सफलता को देखते हुए बहुत सी रियासतों ने उस गुरिल्ला युद्ध में राजाराम का साथ देने का फैसला किया।

औरंगजेब के जनरल जुल्फिकार अली खान ने जिंजी के इस किले को चारों तरफ से घेर लिया था, परन्तु पता नहीं किन गुप्त मार्गों से फिर भी राजाराम अपना गुरिल्ला युद्ध लगातार जारी रखे हुए थे। यह सिलसिला लगभग आठ वर्ष तक चला। अंततः औरंगजेब का धैर्य जवाब दे गया और उसने जुल्फिकार से कह दिया कि यदि उसने जिंजी के किले पर विजय हासिल नहीं की तो गंभीर परिणाम होंगे। जुल्फिकार ने नई योजना बनाकर किले तक पहुँचने वाले अन्न और पानी को रोक दिया। राजाराम ने जुल्फिकार से एक समझौता किया कि यदि वह उन्हें और उनके परिजनों को सुरक्षित जाने दे तो वे जिंजी का किला समर्पण कर देंगे. ऐसा ही किया गया और राजाराम 1697 में अपने समस्त कुनबे और विश्वस्तों के साथ पुनः महाराष्ट्र पहुँचे और उन्होंने सतारा को अपनी राजधानी बनाया।

82 वर्ष की आयु तक पहुँच चुका औरंगजेब दक्षिण भारत में बुरी तरह उलझ गया था और थक भी गया था। अंततः सन 1700 में उसे यह खबर मिली की किसी बीमारी के कारण राजाराम की मृत्यु हो गई है।

क्रमशः

गलमा (बिहार) में महाशिवरात्रि पर्व में विहिप- केन्द्रीय उपाध्यक्ष पं. जीवेश्वर मिश्र

kpvhp7@gmail.com

सेल्फी
मौत के आगोश में समाते युवा

डॉ. विशेष गुप्ता

सोशल मीडिया में स्मार्टफोन का बेजा दखल और सेल्फी का क्रेज सूचना तकनीक के संसार की उभरती हुई नई घटना है।

सेल्फी से जुड़ी कुछ हाल की घटनाएं बताती हैं कि युवाओं के साथ में नाबालिग बच्चों के बीच सेल्फी का यह शौक काफी जानलेवा साबित हो रहा है. साथ ही अपने चारों ओर का ध्यान दिए बिना सेल्फी के प्रति लोगों का यह अतिरेकी व्यवहार संवेदनशून्यता को भी बढ़ा रहा है। हाल ही में हाईस्कूल के दो नाबालिग छात्र यश और शुभम दिल्ली के अक्षरधाम के समीप चलती ट्रेन के सामने सेल्फी लेने के चक्कर में जान गंवा बैठे. दोनों छात्र अपने पांच–छह दोस्तों के साथ चलती ट्रेन के सामने रेलवे ट्रैक पर सेल्फी का वीडियो शूट करना चाहते थे। लेकिन स्टंटबाजी के वक्त ट्रैक पर ट्रेन आ गई और दोनों इस ट्रेन की चपेट में आ गए।

ऐसा ही हाल का एक मामला ओडिसा का है, जहां एक इंजीनियरिंग के छात्र की मौत बिजली के तारों के साथ सेल्फी लेने के चक्कर में हो गई. तीसरी घटना भी ऐसे ही अतिरेकी युवक की है, जो सबसे ऊंची चट्टान से सेल्फी के ही चक्कर में चट्टान से खिसककर समुद्र में जा गिरा और उसकी मौत हो गई।

कुछ समय पहले भी इससे जुड़ी एक घटना बहुत सुर्खियों में रही थी, जब अमेरिका में एक छात्र को कंधे में गोली लगी थी और उसने चिकित्सा सहायता मांगने की जगह अपने खून से लथपथ कंधे की सेल्फी उतारने की गुहार लगाई. अभी हाल ही में अमेरिका के ही ह्यूस्टन में एक 19 वर्षीय किशोर अपनी भरी बंदूक के साथ सेल्फी ले रहा था. इसी बीच उस बंदूक का ट्रिगर दब गया और उसकी मौत गई।

इतना ही नहीं, अभी पिछले दिनों ही अमिताभ बच्चन को अपने एक दोस्त के अंतिम संस्कार में मौजूद कुछ लोगों का वहां सेल्फी बनाना पंसद नहीं आया. दूसरी घटना भी बड़ी तकलीफदेह है, जिसमें सऊदी अरब के एक युवक ने अपने दादा की मौत के बाद उनके साथ सेल्फी उतारी. खास बात यह है कि उसने उसे अपनी मुस्कान के साथ 'गुड बॉय फादर' शीर्षक देकर सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया।

दरअसल, यह तकलीफ केवल इस महानायक की ही नहीं है, पूरे समाज के लिए यह चिंता का विषय है. डिजिटल इंड़िया के फैलाव के बाद अब यह चिंता भी देश को सताने लगी है कि आभासी दुनिया का यह खतरनाक फैलाव कहीं हमारी 'फेस टू फेस दुनिया' के अहसास को समाप्त करके युवाओं में नये आभासी स्टंट की प्रवृत्ति में और इजाफा न कर दे. सेल्फी का जिस तरह से चलन बढ़ा है, उसने जीवन और मौत के फर्क को खत्म कर दिया है।

चाहे रेल दुर्घटना में लोगों का हाहाकार हो अथवा अग्निकांड और बाढ़ का ताडंव या गोली के शिकार लोग अथवा वह चाहे नेताओं की रैली या सभा ही क्यों न हो, वहां जगह का ध्यान दिए बिना लोगों में सेल्फी लेने का उतावलापन जोर पकड़ रहा है। आंकड़े बताते हैं कि सेल्फी लेने के मामले में दुनिया में तकरीबन 150 मौतें हुई। इनमें से 76 भारत में, 9 पाकिस्तान में और 8 अमेरिका में हुई।

पिछले तीन साल के भारत से जुड़े आंकड़े बताते हैं कि 2014 में सेल्फी से मरने वालों की जो संख्या 15 थी, वह 2016 में बढ़कर 73 तक पहुंच गई। जहां तक सेल्फी के अपलोड करने का सवाल है तो आंकड़े बताते हैं कि विगत एक साल में 2400 सेल्फी के नमूने यू–टयूब पर अपलोड किए गए। इनको अपलोड करने वालों की उम्र 18 से 33 साल के बीच रही।

खास बात यह है कि इनमें से अधिकांश सेल्फी ट्रेन की चपेट में आने से अधिक हुई थीं। **इन तथ्यों की एक और खास बात यह रही कि इसमें पुरुषों के मुकाबले महिलाओं में सेल्फी लेने का क्रेज अधिक पाया गया। इससे जुड़ा मनोविज्ञान बताता है कि सेल्फी जितनी डेयरिंग होगी, उसे उतने ही लाइक मिलने की उम्मीदें बढ़ जाती हैं।**

डेयरिंग सेल्फी का यह उतावलापन युवाओं को आत्मघाती बनाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड रहा है। आभासी दुनिया वहीं तक ठीक है, जहां तक यह सामाजिक सरोकारों से जुड़ी रहे और भावनात्मक संतुलन बनाए रखते हुए संवेदनशीलता का संरक्षण करे।

वर्चुअल दुनिया की गिरफ्त से बाहर आने के लिए जरूरी है कि हम आभासी दुनिया की लाइक व डिसलाइक से बचते हुए अपनों खासकर बच्चों के साथ में युवा पीढ़ी के बीच अपना संसार बनाएं। अपने फेस–टू–फेस संबधों के सुख–दुख को साझा करके साइबर दुनिया की सेल्फी से जुड़े इस पहचान के संकट से बचा जा सकता है।

सूरत में मुस्लिम महिला ने संस्कृत में हासिल किए दो गोल्ड मेडल

सूरत, 25 फरवरी। सूरत में रहने वाली कौशल बानु ने संस्कृत भाषा एमए में दो गोल्ड हासिल किए हैं। 24 वर्षीया शादीशुदा महिला ने वेदांत फिलोसॉफी और भागवत पुराण में गोल्ड मेडल जीते हैं। इस के साथ ही वे वीर नर्मदा यूनिवर्सिटी की सभी कालेजों में एमए में 84 परसेन्ट के साथ टॉपर रही हैं।

शादीशुदा होने की वजह से कौशल बानु को कई समस्याओं से जूझना पड़ा, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। वालिता तहसील की महिला आर्ट्स कॉलेज में ग्रेज्युएशन करने के बाद आगे पढ़ाई करने का इरादा नहीं छोड़ा। उन्हें संस्कृत विषय में पहले से ही रुचि थी। कौशल बानु ने बताया कि **रामायण और महाभारत ने संस्कृत में एमए करने के लिए मुझे प्रेरणा दी।**

कौशल बानु के शब्दों में एमए शुरु किया तब मेरी शादी हो चुकी थी। पहले सेमेस्टर में ही गर्भवती हुई और बेटे का जन्म हुआ। बेटे के जन्म के बाद ऐसा लगा कि मेरी पढ़ाई रुक जाएगी। लेकिन परिजन और मेरे पति ने मुझे पूरा सपोर्ट किया। जैसे–जैसा परीक्षा नजदीक आती गई मेरी पढ़ाई का समय बढ़ता गया। मैंने सोना कम कर दिया। कड़ी मेहनत के चलते मुझे यह गोल्ड मेडल मिले हैं।

–जल्पेश काळेणा

नींद खराब न हो इसलिए बेटे को पिता के यहां छोड़ा

रात को तीन बजे नींद में जागने के बाद पढ़ने लगती थी। अगर लाइट जलने लगे तो बच्चा जाग जाता था। बच्चे को नींद में खलल न पड़े इसलिए परीक्षा के अंतिम दिनों में पिता के यहां भेज दिया।

24 में से 16 घण्टे पढ़ाई

संस्कृत में पहले से ही रुचि थी। आखिरी महीने में मैंने 24 घण्टे में से 16 घण्टे तक पढ़ाई की। इसके चलते मुझे दो गोल्ड मेडल मिले। – कौशल बानु

ब्रिटेन में जीवनसाथी साथ रखने के लिए 15.5 लाख कमाई जरूरी

लंदन, 22 फरवरी (प्रेट्र)। यूरोपीय आर्थिक क्षेत्र (ईईए) से बाहर के देशों के लोग 18,600 सौ पाउंड (करीब साढ़े 15 लाख रुपये) की सालाना कमाई होने पर ही ब्रिटेन में जीवनसाथी को साथ रख पाएंगे। 2012 में लागू किए गए इस नियम पर ब्रिटिश सुप्रीम कोर्ट ने मुहर लगा दी। सात न्यायाधीशों की पीठ ने इसे वैध करार दिया।

इस फैसले से बड़ी संख्या में भारतीयों के भी प्रभावित होने का अंदेशा है। नियमों के मुताबिक ईईए क्षेत्र से बाहर के दंपति 22,400 पौंड की कमाई होने पर ही अपने साथ एक बच्चा रख पाएंगे। हर अतिरिक्त बच्चे के लिए इसमें चार सौ पौंड की राशि जुड़ जाएगी। इस फैसले के खिलाफ पीडितों के एक समूह ने शीर्ष कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। इनमें दो पाकिस्तानी मूल के हैं। **ब्रिटेन में जीवनसाथी साथ रखने के लिए 15.5 लाख कमाई जरूरी है।**

दिल्ली में छिपे कश्मीर के तीन पत्थरबाज गिरफ्तार

जम्मू। दिल्ली में छिपकर रह रहे कश्मीर के तीन पत्थरबाजों को पुलिस ने पकड़ा है। इन्हें दिल्ली पुलिस के स्पेशल सेल ने पकड़ा। ये कई दिनों से दिल्ली में ही छिपे हुए थे। इस बारे में कश्मीर पुलिस से भी संपर्क किया गया है। ताकि कश्मीर पुलिस उन्हें अपनी हिरासत में ले। तीनों के खिलाफ सोपोर पुलिस थाने में मामला दर्ज है।

दिल्ली पुलिस ने दो युवकों को संदिग्ध हालत में घूमते हुए देखा। दोनों को पूछताछ के लिए पकड़ा गया। कड़ी पूछताछ के दौरान दोनों से पता चला कि वे पत्थरबाज हैं। कश्मीर बवाल के दौरान खूब पथराव करने के बाद उनका नाम पुलिस के रिकॉर्ड में गया था। यावर मुजफ्फर, वसीम डार तथा दानिश डार के खिलाफ सोपोर थाने में मामला दर्ज हुआ था। उसके बाद वे तीनों दिल्ली में आकर छिप गए। पुलिस ने एक अन्य जगह पर छापा मारा और उनके तीसरे साथी को भी पकड़ लिया। तीनों को थाने में रखा गया। कश्मीर पुलिस को सूचना दी गई है। (भास्कर, 23 फरवरी)

सुभाषित

खलानां कण्टकानां च द्विविधैव प्रतिक्रिया।
उपानान्मुखभंगो वा दूरतो वा विसर्जनम्।।

चाणक्यनीति (15– 03)

दुर्जन और कण्टक– इनसे बचने के दो ही उपाय हैं, या तो जूतों से उनका मुखमर्दन करना अर्थात् कुचलना अथवा उन्हें दूर से ही त्याग देना, उनसे बचकर निकल जाना।

रामजस कॉलेज विवाद : अनुपम खेर बोले

इनटॉलरेंट गैंग वापस आ गया है, चेहरे वही हैं; नारे बदल गए हैं

इनटॉलरेंट गैंग वापस आ गया है पर चेहरे वही हैं, नारे बदल गए हैं। खेर को लगता है कि रामजस कॉलेज से उठा विवाद देश में असहिष्णुता के मुद्दे को फिर से भड़काने की साजिश है।

बॉलीवुड अभिनेता अनुपम खेर इसे 'इनटॉलरेंट गैंग की वापसी' मानते हैं। खेर ने गुरमेहर कौर के कैंपेन के बाद उठे विवाद पर ट्वीट कर कहा, "इनटॉलरेंट गैंग वापस आ गया है। वही चेहरे, अलग नारे। #Intolerance #AwardWapsi #Emergency #DemonitisationDisaster #BharatKeTukdeß

अनुपम खेर के इस ट्वीट पर कई यूजर्स ने उन्हें ट्रोल किया। एक यूजर ने लिखा, "यही सोच रहे थे सब, अंकल मार्च कब निकालेंगे।" महेश ने चुटकी लेते हुए कहा, "यूपी में पहले तीन राउंड बीजेपी को मिले, तो अब सेकेंडरी हथियार इनटॉलरेंस निकालते हैं, यह दिल्ली और बिहार चुनावों में काम आया था।" राजेश अरोड़ा ने खेर की खिंचाई करते हुए लिखा, "सर, आप भूल रहे हो, आपको सिर्फ कश्मीरी पंडित वाले मुद्दे के लिए रखा है, सिलेबस से बाहर न जाएं।" धर्मेन्द्र ने कहा, "यह पूरा स्टन्ट उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की हार के बाद के बचाव का पूर्वाभ्यास मात्र है। गर्त में उतर चुके हैं तमाम विरोधी।"

http://www.jansatta.com
(नई दिल्ली, जनसत्ता, 1 मार्च)

नाबालिग रेप पीड़िता ने दिया बच्चे को जन्म, पादरी ने किया था दुष्कर्म

कन्नूर, 28 फरवरी। केरल के कन्नूर में नाबालिग रेप पीड़िता के बच्चे को जन्म देने का मामला सामने आया है। रेप के आरोपी पादरी को गिरफ्तार कर लिया गया है। एक निजी संस्था ने मामले की जानकारी मिलते ही पुलिस को इसकी सूचना दी थी।

आरोपी पादरी का नाम रॉबिन वडकुमचेरी है। मिली जानकारी के मुताबिक, पिछले साल मई में आरोपी पादरी ने 17 साल की पीड़िता के साथ रेप किया था। आरोपी पादरी उसी स्कूल में बतौर मैनेजर तैनात था, जहां पीडिता पढ़ती थी।

पीड़िता के परिजनों की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी पादरी रॉबिन के खिलाफ आईपीसी की धारा–376 और पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के मुताबिक, आरोपी रॉबिन ने पुलिस पूछताछ में अपना जुर्म कबूल कर लिया है. फिलहाल पुलिस इस मामले में अग्रिम कार्रवाई कर रही है।

रेवती राजीवन
http://aajtak.intoday.in

राजस्थान के ३२०० मदरसों के लिए ६० करोड़ का प्रस्ताव

कोटा (राजस्थान), 21 फरवरी । शिक्षा विभाग के निर्देश पर नए शिक्षण–सत्र में अब बच्चों को उर्दू पाठ्यक्रम और पुस्तकों का सार ऑन लाइन मिलेंगे। उनके लिए फर्नीचर की व्यवस्था होगी।

यह बात मदरसा बोर्ड की अध्यक्ष (चेयरमैन) मेहरुनिशा टांक ने कोटा प्रवास के दौरान भास्कर से बातचीत में कही। उन्होंने बताया कि, मदरसों के विकास के लिए बोर्ड की ओर से प्रदेश के ३२०० मदरसों के लिए ६० करोड़ के प्रस्ताव सरकार को भेज दिए गए हैं। जिसमें मदरसों में पुस्तकालय से लेकर बच्चों के लिए संसाधन सहित अन्य सुविधाएं मुहैया करवाई जाएगी।

(www.hindujagruti.org)

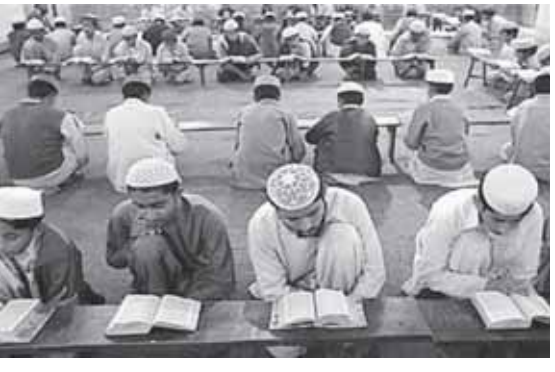

पृष्ठ 11 का शेषांश....

वैज्ञानिक वैदिक पद्धति का स्पष्ट वर्णन है। जिसके तहत शव को गाड़ने, बहाने या जंगल में छोड़ने के विपरीत समस्त मानव जाति के लिए वैदिक यज्ञ विधि से किए गए अग्नि दाह को ही पूर्णतया वैज्ञानिक, प्रदूषण रहित पुण्य कर्म माना गया है। जो लोग इस वेदवाणी से अनभिज्ञ हों या नहीं मानते हों उन्हें भी यह बात तो समझनी ही पड़ेगी कि जब आगामी कुछ वर्षों में भारत दुनिया की सर्वाधिक मुस्लिम आबादी वाला देश बन जाएगा, उन सब के लिए कब्रिस्तान हेतु जमीन कहाँ से लाएगा। vinodbansal01@gmail.com

रांची में संगोष्ठी को संबोधित करते हुए एकल अभियान के प्रणेता श्याम जी गुप्त तथा उपस्थित नगरीय बंधु

विगत सप्ताह केशव सृष्टि, मुम्बई में विशेष सम्पर्क आयाम की केन्द्रीय बैठक को सम्बोधित करते विहिप-सह संगठन महामंत्री विनायकराव देशपांडे

प्रशिक्षण वर्ग

दुर्गावाहिनी एवं मातृशक्ति प्रशिक्षण वर्ग पोर्टब्लेयर अण्डमान में 25–26 फरवरी को आयोजित किया गया जिसमें 87 शिक्षार्थी उपस्थित रहीं। दुर्गावाहिनी की अ0भा0 सह– संयोजिका प्रज्ञा महाला एवं प्रणव कन्या संघ पोर्ट ब्लेयर की साध्वी जी भी उपस्थित रहीं। mondalpartha1982@gmail.com

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-1/4031/2015-17
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
मुद्रण- तिथि : 13.03.17
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

LPS BOSSARD

MORE THAN NUTS AND BOLTS

LPS Bossard is a leading supplier of intelligent solutions for industrial fastening technology. The company's complete protfolio for fasteners includes sales, technical consulting (engineering) and inventory management (logistics).Its customers include local and multi-national industrial companies who use LPS Bossard's solutions to improve their productivity.

MR. RAJESH JAIN
MD,LPS BOSSARD

LPS Bossard Pvt. Ltd.
NH-10,Delhi Road,Kharawar Bye Pass
Rohtak-124001 (INDIA)
Phone: +91-1262 305164-200 Fax : +91-1262 305111,112
Email: india@lpsboi.com website : www.bossard.com

प्रकाशक व मुद्रक परमानन्द मनोहर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'साइबर क्रिएशन्स' जे.ई.–9, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली–17 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : मानवेन्द्र नाथ पंकज